Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُوْنَ ○

(अल् रअद **:04)**

अनुवाद : और वही है जिसने ज़मीन को फैला दिया और उसने पहाड़ और दरिया बनाए और हर किस्म के फलों में से उसने इस में दो दो जोड़े बनाए। वह रात से दिन को ढाँप देता है। निसन्देह इस में अध्ययन करने वाले लोगों के लिए निशानात हैं।

वर्ष- 9
अंक - 35

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

23 सफ़र , 1446 हिज्री कमरी, 29 ज़हूर 1403 हिज्री शम्सी, 29 अगस्त 2024 ई.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

याद रखो उसने ईमान का आनंद नहीं उठाया जिसने नमाज़ में लज़्ज़त नहीं पाई

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

नमाज़ में दुआ और रोना

इन्सान की ईबादत की ज़िंदगी का बड़ा भारी मयार नमाज़ है। वह व्यक्ति जो ख़ुदा के हुज़ूर नमाज़ में रोता रहता है,अमन में रहता है। जैसे एक बच्चा अपनी माँ की गोद में चीख़-चीख़ कर रोता है और अपनी माँ की मुहब्बत और शफ़क़त को महसूस करता है। इसी तरह पर नमाज़ में मिन्नत और आंसुओं के साथ प्रार्थना के साथ ख़ुदा के समक्ष गिड़गिड़ाने वाला अपने आपको रबूबियत की अनुकंपा की गोद में डाल देता है। याद रखो उसने ईमान का आनंद नहीं उठाया जिसने नमाज़ में लज़्ज़त नहीं पाई। नमाज़ केवल टक्करों का नाम नहीं है। कुछ लोग नमाज़ को तो दो-चार चोंचें लगा कर जैसे मुर्ग़ी ठूंगे मारती है ख़त्म करते हैं और फिर लंबी चौड़ी दुआ शुरू करते हैं, हालाँकि वह वक़्त जो अल्लाह तआला के हुज़ूर अर्ज़ करने के लिए मिला था उसको केवल एक रस्म और आदत के तौर पर जल्द-जल्द ख़त्म करने में गुज़ार देते हैं और खुदा के दरबार से निकल कर दुआ मांगते हैं। नमाज़ में दुआ माँगो। नमाज़ को दुआ का एक वसीला और माध्यम समझो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 28 ऐडीशन 2018 कादियान)

★ ★ ★

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

न्याय एवं निष्पक्षता का महत्व

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : तुमसे जो पहले थे, उनको केवल इस बात ने हलाक कर दिया कि उनकी आदत थी कि जब उनमें कोई बड़ा चोरी करता तो उसको छोड़ देते और अगर उनमें से ग़रीब चोरी करता तो उसके ख़िलाफ़ सज़ा का फ़ैसला करते। और अल्लाह की क़सम! अगर फ़ातमा बिंत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) चोरी करेगी तो मैं उसका भी हाथ काट डालूँगा।

(बुख़ारी किताबुल सुहा बाब सुहा फ़िल् लैल)

ईमान की लज़्ज़त

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीन बातें जिस में हों वह ईमान का मज़ा पा लेता है। यह कि अल्लाह और उसका रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त दूसरी चीज़ों से बढ़कर उसको प्यारे हों और यह कि जिस इन्सान से भी मुहब्बत करे केवल अल्लाह तआला ही के लिए मुहब्बत करे और यह कि कुफ़्र में लौटना ऐसा ही बुरा समझे जिस तरह वह आग में फेंके जाने को बुरा समझता है।

(बुख़ारी किताबुल ईमान बाब हलावत ईमान)

★ ★ ★

तौहीद के मुक़ाबला में शिर्क करना ऐसा ही है जैसा कि कोई व्यक्ति बुलंदी से गिर जाए और टुकड़े-टुकड़े हो जाए।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः अल् हज आयत नम्बर : 32 "وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ"की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

तौहीद के मुक़ाबला में शिर्क करना ऐसा ही है जैसा कि कोई व्यक्ति बुलंदी से गिर जाए और टुकड़े-टुकड़े हो जाए और हवा उसके टुकड़ों को दूर-दूर फेंक दे क्योंकि मुशरिक अपने कई आक़ा तजवीज़ करता है और हर आक़ा को उसके गोश्त पर हक़ है।

इस जगह याद रखना चाहिए कि शिर्क का मसला ऐसा सीधा सादा नहीं जैसा कि आम तौर पर समझा जाता है बल्कि निहायत बारीक मसला है और यही वजह है कि अक्सर कौमें जो बज़ाहिर शिर्क की मुख़ालिफ़ हैं अमलन शिर्क में मुबतला पाई जाती हैं और इस का कारण यही है कि वे शिर्क की हक़ीक़त समझने से क़ासिर रही हैं। असल बात यह है कि शिर्क की कोई एक तारीफ़ नहीं है बल्कि मुख़्तलिफ़ नुक़्ता निगाह से इस मर्ज़ की हक़ीक़त को समझा जा सकता है। जब तक उसे एक तारीफ़ के अंदर लाने की कोशिश की जाए उस वक़्त तक यह मसला एक एक अघुलनशील गांठ ही रहती है । मेरे नज़दीक शिर्क निम्नलिखित इक़साम में मुनक़सिम है

प्रथम : यह ख़्याल करना कि एक से ज़्यादा हस्तियाँ हैं जो एक समान ताक़तें रखती हैं और सबकी सब दुनिया की हाकिम और सरदार हैं, यह शिर्क फ़िल् ज़ात है।

द्वितीय : यह ख़्याल करना कि दुनिया की मुदब्बिर हस्तियाँ एक से ज़्यादा हैं जिनमें कमालात तक़सीम हैं किसी में कोई कमाल है और किसी में कोई। यह शिर्क भी शिर्क फ़िल् ज़ात में ही दाख़िल है।

तीसरे : वे आमाल जो मुख़्तलिफ़ क़ौमों में आजिज़ी और इनकेसारी के लिए इख़्तेयार किए गए हैं। इन में से जो हद दर्जा के इंतेहाई आजिज़ी के आमाल हैं इन को ख़ुदा के सिवा किसी और के लिए इख़्तेयार करना उदाहरणतः सजदा इंतेहाई अदब और तज़ल्लुल के इज़हार का माध्यम है, अतः यह अमल केवल ख़ुदा के लिए जायज़ है किसी और के लिए नहीं लेकिन सजदा के इलावा भी। मुख़्तलिफ़ अक़्वाम में मुख़्तलिफ़ हरकात-ए-बदन इंतेहाई तज़ल्लुल के लिए क़रार दे दी गई हैं जैसे हाथ बांध कर खड़ा होना, या रुकु इत्यादि करना। इन सब उमूर को ख़ुदा तआला ने इबादत-ए-इलाही का हिस्सा बना दिया है। अतः अब यह अमल किसी और के लिए जायज़ नहीं।

चतुर्थ : शिर्क की चौथी किसम यह है कि इन्सान अस्बाब ज़ाहेरी के विषय में यह समझे कि उनसे मेरी सब ज़रूरियात पूरी हो जाएँगी और अल्लाह तआला के तसर्रुफ़ का ख़याल-ए-दिल से हटा दे और यह ख़्याल करे कि केवल माद्दी अस्बाब ही ज़रूरत को पूरा करने वाले हैं, यह भी शिर्क है। हाँ अगर यह ख़्याल करे कि इन सामानों में ख़ुदा तआला ने अमुक ताक़त रखी है और इस के इरादा के मातहत उनके नतायज पैदा होंगे तो ये शिर्क नहीं होगा।

शेष पृष्ठ 5 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

ख़ुत्बः जुमअः

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सलाम को रिवाज देने के लिए तुम चाहे किसी को जानते हो या नहीं जानते उसको सलाम करो

हदीकतुल महदी में एक अस्थाई शहर बनाया गया है ताकि जल्सा सालाना के माहौल में रह कर हम दुनियावी झमेलों से अलैहदा हो कर अपनी दीनी, रुहानी, अख़लाक़ी हालतों को बेहतर करने की कोशिश करें

जल्से पर आने वालों को किसी भी किस्म की सहूलत उपलब्ध होने से ज़्यादा इस बात की फ़िक्र होनी चाहिए कि किस तरह हम इस माहौल से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठा सकते हैं

मैं समस्त कारकुनान को इस तरफ़ तवज्जा दिलानी चाहता हूँ कि जो भी डयूटियाँ उनके सपुर्द हैं वे उन्हें अच्छे रंग में अंजाम देने की कोशिश करें। बेहतरीन रंग में अंजाम देने की कोशिश करें। जलसा के मेहमानों की हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान समझ कर ख़िदमत करें। उन्हें अल्लाह तआला की ख़ातिर नेक उद्देश्य के लिए आने वाले मेहमान समझ कर ख़िदमत करें। आला अख़लाक़ का प्रदर्शन करें। मेहमान की तरफ़ से आपके ख़्याल में अगर कोई ज़्यादती भी हो जाती है तो इस से अंदेखा करें । यही हमारी रिवायत है। यही आला अख़लाक़ हैं। यही ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हुक्म है। यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम से चाहते हैं। अब यह मेहमान-नवाज़ी और आला अख़लाक़ का मुज़ाहरा अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत अहमदिया का हर मुल्क में एक ख़ास वस्फ़ बन चुका है।

हर विभाग के कारकुनान को अपने मेहमानों का अच्छी तरह ख़्याल रखने की कोशिश करनी चाहिए, चाहे वे ट्रैफ़िक की डयूटी है या पार्किंग की डयूटी है या खाना खिलाने की डयूटी है या डिसिप्लिन की डयूटी है या गेट पर चैकिंग की डयूटी है या hygiene और सफ़ाई की डयूटी है या पानी स्पलाई की डयूटी है कोई भी डयूटी है, कोशिश करें कि जहां तक संभव हो मेहमान की सहूलत का इंतेज़ाम हो और उनको किसी तरह की तकलीफ़ न पहुंचे।

जो अल्लाह की इच्छा की खातिर यात्रा इख़्तेयार करने वाले होते हैं उनकी इन दुनियावी ज़रूरियात और आरामों की तरफ़ बहुत कम तवज्जा होती है और यही उनका बुनियादी उद्देश्य होता है कि यहां रह कर ज़्यादा से ज़्यादा रुहानी खानों से फ़ायदा उठाएं

सच्चे मोमिन के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वे ग़ुस्सा को दबाने वाले होते हैं और ज़्यादती करने वाले या जिन पर ज़्यादती हो रही हो दोनों को मैं यह कहता हूँ कि जल्सा के माहौल के तक़द्दुस को सामने रखें और मेहमान भी छोटी-छोटी कमियाँ अनदेखा किया करें और क्षमा से और देखा-अंदेखा से काम लिया करें

यहां आने वाले एक दूसरे को सलाम करने का भी रिवाज दें अल्लाह तआला ने हमें जो यह पवित्र और बाबरकत दुआ सिखाई है इस की तरफ़ इन दिनों में बहुत तवज्जा दें ताकि हम हर तरफ़ सलामती और प्यार और मुहब्बत फैलाने वाले बन जाएं और यह माहौल विशेषता अल्लाह के लिए प्यार और मुहब्बत और भाई चारे का माहौल बन जाए

जलसा सालाना बर्तानिया के अवसर पर मेज़बानों और मेहमानों को कीमती नसाएह तथा इरशाद-ए-नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रोशनी में सलाम को रिवाज देने की तलक़ीन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 जुलाई 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔

أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से आज जलसा सालाना बर्तानिया शुरू हो रहा है और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हज़ारों लोग यहां दीनी और रुहानी माहौल से फ़ायदा उठाने के लिए आए हैं। इन दिनों में यहां हदीकतुल महदी में एक अस्थाई शहर बनाया गया है ताकि इस माहौल में रह कर हम दुनियावी झमेलों से अलैहदा हो कर अपनी दीनी, रुहानी, अख़लाक़ी हालतों को बेहतर करने की कोशिश करें अतः ऐसे हालात में आने वालों को किसी भी किस्म की सहूलत उपलब्ध आने से ज़्यादा इस बात की फ़िक्र होनी चाहिए कि किस तरह हम इस माहौल से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठा सकते हैं।

लेकिन बहरहाल इन्सान के साथ बशरी ज़रूरियात और तक़ाज़े भी लगे हुए हैं। इसलिए इंतिज़ामेया यह कोशिश करती है कि इन ज़रूरियात को पूरा करने और आने वालों को जिस हद तक मुम्किन हो आराम पहुंचाने के लिए इंतेज़ाम हो सकते हैं वे करें। इस के लिए विभिन्न विभागों में जलसा सालाना के दिनों में हमारे निज़ाम में क़ायम किए जाते हैं और हज़ारों कारकुनान रज़ाकाराना तौर पर अपनी ख़िदमात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों की ख़िदमत के लिए पेश हैं।

अतः इस हवाले से पहले तो मैं समस्त कारकुनान को इस तरफ़ तवज्जा दिलानी चाहता हूँ कि जो भी डयूटियाँ उनके सपुर्द हैं वह उन्हें अच्छे रंग में अंजाम देने की कोशिश करें। बेहतरीन रंग में अंजाम देने की कोशिश करें। जलसा के मेहमानों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान समझ कर ख़िदमत करें। उन्हें अल्लाह तआला की ख़ातिर नेक उद्देश्य के लिए आने वाले मेहमान समझ कर ख़िदमत करें। आला अख़लाक़ का प्रदर्शन करें। मेहमान की तरफ़ से आपके ख़्याल में अगर कोई ज़्यादती भी हो जाती है तो इसे अंदेखा करें। यही हमारी रिवायत है। यही आला अख़लाक़ हैं। यही ख़ुदा और उस के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आदेश है। यही हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हम से

चाहते हैं। अब ये मेहमान-नवाज़ी और आला अख़लाक़ का मुज़ाहरा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया का हर मुल्क में एक ख़ास वस्फ़ बन चुका है।

जलसे के दिनों में विशेषतार इस तरफ़ बहुत तवज्जा दी जाती है। अतः यहां भी हमेशा की तरह सब कारकुनान इन आला औसाफ़ का मुज़ाहरा करें जो इस्लामी तालीम की विशेषता हैं । मुझे इलम है कि सब कारकुनान इस जज़बे से काम करते हैं और अब भी करेंगे। कल मैंने कारकुनान से जो संक्षिप्त सम्बोधन था जिसे कारकुनान से ख़िताब कहते हैं इस में भी यही कहा था लेकिन याददेहानी और कई नए आने वालों की तर्बीयत के लिए यह मैं बातें कह रहा हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि मेहमान का दिल तो आईना की तरह होता है, भावुक होते हैं । उनका ख़्याल रखना चाहिए। ज़रा सी बात पर हल्की सी ठोकर से वह शीशे की तरह टूट जाता है।

(उद्धृत मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 406 ऐडीशन 1984 ई.)

मेहमान का दिल बड़ा नाज़ुक होता है और फिर उस व्यक्ति के लिए कई दफ़ा ठोकर का बायस बन जाता है। बाअज़ सही तरह सोचते नहीं कि यह तो सिर्फ इस कारकुन की ग़लती थी। जमाअती तालीम का इस में कोई क़सूर नहीं है लेकिन बाज़ों को बहरहाल ठोकर लग जाती है। अतः बहुत ख़्याल रखने की ज़रूरत है। बहरहाल ये बातें उन लोगों के मुताल्लिक़ हैं जो नए आने वाले हैं जिनकी सही तर्बीयत नहीं हुई या जमाअत में अभी तक शामिल नहीं हुए होते लेकिन यहां आने वाले अक्सर अल्लाह तआला के फ़ज़ल से अहमदी हैं ये बात समझ कर आते हैं कि यहां तकालीफ़ बर्दाश्त करनी पड़ेंगी लेकिन बहरहाल जैसा कि मैंने कहा कुछ मेहमान बाहर के भी होते हैं जिनका ख़ास ख़्याल रखना पड़ता है जो अभी तक जमाअत में शामिल नहीं हुए या जिनकी सही तर्बीयत नहीं हुई। अतः उसके लिए जो कारकुनान हैं कारकुनान, हर विभाग के जो कारकुनान हैं उनको अपने मेहमानों का अच्छी तरह ख़्याल रखने की कोशिश करनी चाहिए, चाहे वे ट्रैफ़िक की डयूटी है या पार्किंग की डयूटी है या खाना खिलाने की डयूटी है या डिसिप्लिन की डयूटी है या गेट पर चैकिंग की डयूटी है या हाई जैन और सफ़ाई की डयूटी है या पानी स्पलाई की डयूटी है कोई भी डयूटी है कोशिश करें कि जहां तक संभव है मेहमान की सहूलत का इंतेज़ाम हो और इसको किसी तरह तकलीफ़ न पहुंचे।

कुछ बातें उसके बाद में मेहमानों को भी कहनी चाहूँगा। इसी तरह कुछ इंतेज़ामी बातें भी हैं जो मैं अर्ज़ करूँगा।

मेहमानों के लिए तो सबसे पहले मैं यह बात कहनी चाहता हूँ कि आप लोग एक नेक उद्देश्य के लिए यहां आए हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमान बन कर यहां आए हैं। दुनियावी एज़ाज़ और दुनियावी ख़िदमत के बजाय उन आला अख़लाक़ में मज़ीद तरक़्क़ी करने को अपने पेश-ए-नज़र रखें जो एक हक़ीक़ी मुस्लमान का गौरव है और जिसको हासिल करने के लिए आप लोग यहां आए हैं और इसी उद्देश्य के लिए आना चाहिए। बेशक निज़ाम-ए-जमात के अधीन जैसा कि मैं ने कहा इस पाक और बाबरकत और बामक़सद सफ़र करने वाले मुसाफ़िरों और मेहमानों के लिए ख़िदमत का निज़ाम मौजूद है और ज़रूरियात के लिए जो ज़रूरियात उपलब्ध हो सकती हैं वे मुहय्या करने की कोशिश इंतेज़ामिया करती है। लेकिन जो अल्लाह की इच्छा की खातिर सफ़र इख़्तेयार करने वाले होते हैं इन को इन दुनियावी ज़रूरियात और आरामों की तरफ़ बहुत कम तवज्जा होती है और यही उनका बुनियादी उद्देश्य होता है कि यहां रह कर ज़्यादा से ज़्यादा रुहानी मायदे से फ़ायदा उठाएं।

अतः आप अपने आपको कभी दुनियावी मुसाफ़िरों और मेहमानों के ज़ुमरे में लाने की कोशिश न करें। अगर इस बात को आप समझ जाऐंगे तो मेज़बानों की कमज़ोरियों और कमियों से भी आप अंदेखा करते रहेंगे अन्यथा कई दफ़ा देखने में आता है कि शिकवा पैदा हो जाता है कि अमुक जगह के लोगों का बेहतर इंतेज़ाम था। अमुक लोगों को ज़्यादा सहूलत उपलब्ध कराई गई थी। अमुक के साथ बेहतर सुलूक हुआ। अमुक के साथ कम सुलूक हुआ। तो इस तरह फिर उस किस्म के शिकवे पैदा नहीं होंगे।

कई दफ़ा अंदाज़े की ग़लती से कुछ कमज़ोरियाँ रह जाती हैं तो उनको नज़रअंदाज करना चाहिए। अगर हर एक के दिल में ये ख़्याल हो, हर आने वाले अहमदी मुस्लमान के दिल में यह ख़्याल हो कि हमारा उद्देश्य केवल और केवल रुहानी मायदा हासिल करना है न कि किसी भी किस्म की दुनियावी सहूलतों को हासिल करना है तो फिर दोनों मेज़बान और मेहमान मुहब्बत और प्यार से ये दिन गुज़ारेंगे। बहरहाल यह भी मैं बता दूं कि इंतेज़ामिया की तरफ़ से पूरी कोशिश होती है कि सब मेहमानों के साथ एक तरह से सुलूक किया जाए लेकिन फिर भी बाअज़ दफ़ा जैसा कि मैंने कहा कमी बेशी हो जाती है और इस से फिर मेहमानों को अंदेखा करना चाहिए। यही हमारी तालीम है। जहां हमें यह हुक्म है कि मेहमान की इज़्ज़त करो और तकरीम करो और ख़्याल रखो वहां मेहमानों को भी यही कहा गया है कि तुम लोग भी मेज़बान की सहूलत का ख़्याल करो। बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मेहमानों की बहुत इज़्ज़त-ओ-तकरीम फ़रमाते थे और यह भी फ़रमाया करते थे कि अपनी ज़रूरियात बे-तकल्लुफ़ी से वर्णन कर दिया करो।

(उद्धृत मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 112 ऐडीशन 1984 ई.)

लेकिन यह आम हालात की बात है। जलसा के जो मेहमान थे उनके लिए आप फ़रमाया करते थे कि एक ही इंतेज़ाम हो। हर मेहमान की इसी तरह मेहमान-नवाज़ी की जाए जो एक इंतेज़ाम के तहत है और जहां तक संभव है एक तरह की हो।

(उद्धृत सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अज़ हज़रत याक़ूब अली इर्फ़ानी साहब रज़ियल्लाहु अन्हो भाग 3 पृष्ठ 395-396)

जलसा के दिनों में मेहमान-नवाज़ी का निज़ाम आम हालात से मुख़्तलिफ़ हो जाता है और यही कोशिश होती है कि हज़ारों लोग जो यहां आए हुए हैं उनको एक ही तरह से जिस हद तक मुम्किन हो सहूलतें मुहय्या करने की कोशिश की जाए सिवाए जो ग़ैर मेहमान आते हैं या ग़ैर मुल्की मेहमान आते हैं उनकी कुछ मजबूरियों की वजह से मुख़्तलिफ़ इंतेज़ाम भी करना पड़ता है। बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम उस तकरीम और इज़्ज़त के बावजूद जो आप मेहमानों की करते थे आम हालात में भी मेहमान के दिल में ये बात रासिख़ फ़रमाते थे कि तुम्हारे यहां आने की असल ग़रज़ दीन सीखना है और अपने दिल-ओ-दिमाग़ को पाक करना है और अल्लाह तआला का क़ुरब पाने की मनाज़िल को तै करना है। अतः यही ग़रज़ है जिसके हुसूल के लिए हर साल आप लोग यहां मेहमान बन कर आते हैं, जमा होते हैं और इसी ग़रज़ को हासिल करने के लिए जलसा पर आने वाले मेहमानों को आना चाहिए। इन दिनों में जलसा में बैठ कर जलसा गाह में होने वाले प्रोग्राम और तक़ारीर को ग़ौर से सुनें और उनसे फ़ायदा उठाने की कोशिश करें।

मेहमानों के लिए चंद उमूमी बातें और भी पेश करता हूँ। मोमिन के लिए अपने वक़्त का सही इस्तिमाल इंतेहाई ज़रूरी है। जब ऐसे इजतेमाई अवसर पर सब जमा होते हैं तो दूर-दूर से आए हुए अज़ीज़ों और वाक़िफ़ कारों की एक दूसरे से मुलाक़ातों और मिल बैठने की ख़ाहिश भी होती है। अब जबकि सिर्फ एक देश के रहने वाले वाक़िफ़ कार और अज़ीज़ नहीं बल्कि दूसरे मुल्कों के रहने वाले वाक़िफ़ कारों और अज़ीज़ों से भी मुलाक़ात के सामान अल्लाह तआला ने पैदा फ़रमाए हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़ल से वे जमाअत अता फ़रमाई है जिसने मुल्कों और क़ौमों की सरहदों को और फ़िर्क़ों को ख़त्म कर दिया है और एक अज़ीम भाई चारे की बुनियाद पड़ चुकी है। आप ने जलसा में शामिल होने वालों का एक उद्देश्य यह भी वर्णन फ़रमाया है कि जमाअत के प्रेम और मज़बूती पर आधारित हों।

(उद्धृत शहातुल् क़ुरआन, रुहानी खाज़ायन भाग 6 पृष्ठ 394)

उनमें मज़बूती पैदा होती चली जाए। हम एक क़ौम बन जाएं और इसके लिए ज़ाहिर है मिल बैठने की ज़रूरत भी होती है। आपस में एक दूसरे से मेल-मुलाक़ात भी होती है और यह ज़रूरी चीज़ है। एक दूसरे से वाक़फ़ीयत बढ़ाने और ताल्लुक़ बढ़ाने के लिए ज़रूरी चीज़ है लेकिन सारा दिन जलसे का जो प्रोग्राम हो रहा होता है इस को बहरहाल सुनने में वक़्त गुज़ारना चाहिए और इस के बाद ही जो अवसर उपलब्ध हो उस में फिर आपस में मिल बैठें और बातें करें और संबंध बढ़ाएं।

यह भी देखने में आया है कि कई दफ़ा कई पुराने वाक़िफ़ कारों का ये मिल बैठना इतना लंबा हो जाता है जो देर बाद मिलते हैं तो यह इतनी लंबी मुलाक़ातें हो जाती हैं कि ख़ुश गपियों में सारी सारी रात ज़ाए हो जाती है और फिर नमाज़-ए-फ़ज्र के वक़्त तहज्जुद तो ख़ैर अलैहदा रही फ़ज्र के वक़्त भी मुश्किल से उनकी आँख खुलती है।

फिर यह भी होता है कि कई दफ़ा इंतेज़ामिया को भी इस से दिक़्क़त पेश आती है कि खाने की मारकी में बातों में लगे और खाना खाते हुए लोग लंबी बातों में व्यस्त हो जाते हैं। इतना वक़्त गुज़ारते हैं कि कारकुनों को फिर याददेहानी करवानी पड़ती है कि नमाज़ का वक़्त हो गया है या बहुत ज़्यादा वक़्त हो गया है। बहरहाल इसी त र ह घरों में ठहरने वालों को भी हो सकता है दिक़्क़तें पेश आती हों तो एतिदाल से काम लेना चाहिए। मेहमानों को विशेषता इस बात का ख़्याल रखना चाहिए कि मेज़बानों ने भी अपने काम समेटने हैं और अगले वक़्त की तैयारी करनी है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए हुए मेहमानों के बारे में भी अल्लाह तआला का यही हुक्म था कि बैठ के बातों में वक़्त ज़ाए न किया करो। जब खाना पीना हो जाए तो उठ के चले जाया करो। (अल् अहज़ाब् : 54) अतः विशेषता खाने की मार की में जब ज़्यादा भीड़ हो जाए तो कई दफ़ा खाना शिफ्टों में खिलाना पड़ता है। इसलिए फ़ौरी तौर पर खाना खा के उठ जाना चाहिए ताकि दूसरे लोग भी आ सकें और आराम से खाना खा सकें। अतः ये बातें अगर होंगी तो फि रकिसी किस्म के शिकवे भी पैदा नहीं होंगे और इस ख़ुशगवार माहौल में सब काम होते रहेंगे।

फिर इसी तरह जब बड़ी संख्या में लोग जमा हों तो कई दफ़ा बदमज़गियाँ पैदा हो जाती हैं। कभी इंतेज़ामिया से शिकवे की वजह से मेहमान ने किसी कारकुन को बुरा-भला कह दिया, कारकुन ने भी आगे से जवाब दे दिया तो फिर बात मज़ीद आगे बढ़ती चली जाती है और इस तरह रंजिशों का एक सिलसिला शुरू हो जाता है। चाहे वह इक्का दुका वाक़ियात हो रहे हों लेकिन माहौल इस से तंग हो जाता है। दूसरे लोग भी प्रभावित होते हैं। यदि तू शिकवे करने वाले या ग़लत बात कहने वाले यहां के रहने वाले हैं अर्थात यूके में रहने वाले हैं तो फिर यह सिलसिला और भी लंबा हो जाता है और फिर दूसरे अवसरों पर भी इस का इज़हार हो जाता है और केवल यहीं नहीं बाक़ी मुल्कों में भी यही चीज़ सामने देखने में आती है।

हक़ीक़ी मोमिन के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह ग़ुस्सा को दबाने वाले होते हैं और ज़्यादती करने वाले या जिन पर ज़्यादती हो रही हो दोनों को मैं यह कहता हूँ कि जलसा के माहौल के तक़द्दुस को सामने रखें और मेहमान भी देखा अंदेखा से और क्षमा से और दरगुज़र से काम लें।

अगर उनके ख़्याल में ज़्यादती हो भी जाए तब भी सब्र और हौसले से काम लें। सब्र और हौसला दिखाएंगे और कारकुन भी अपने ग़ुस्सा को मेहमान की तरफ़ से ज़्यादती होने के बावजूद अगर वे समझते हैं कि ज़्यादती हो रही है फिर भी दबा जाएं और ग़ुस्सा पी जाएं।

इसी तरह कारड की चैकिंग है और सैक्योरिटी है क्योंकि सैक्योरिटी चैक भी आजकल के हालात में बहुत ज़रूरी है, बड़ी एहतियात करनी पड़ती है। इस के मुख़्तलिफ़ मरहलों से गुज़रने की वजह से कुछ लोगों को तकलीफ़ भी हो सकती है और हो सकता है कि देर भी लग जाए और विशेषता औरतों में यह ज़्यादा मसला पैदा होता है क्योंकि उनके बच्चे भी होते हैं और उनके सामान भी ज़्यादा होते हैं। औरतों ने कई दफ़ा बेशुमार बैग उठाए होते हैं और हर बैग को चैक करने में फिर वक़्त भी लग जाता है। इसलिए एक तो औरतों को यह कोशिश करनी चाहिए कि आज तो अगर कोई ज़्यादा सामान ले आए हैं तो ठीक है लेकिन बाहर से आने वाले लोग जो जलसा गाह में नहीं ठहरे हुए अक्सर तो बाहर से ही आ रहे होते हैं वे आइन्दा दो दिनों में कम से कम अपना सामान लाएंगे ताकि चैकिंग में कम से कम वक़्त ख़र्च हो। जो बच्चे वालियाँ हैं वे भी सिर्फ बच्चों की ज़रूरत की चीज़ें लाएंगे। ग़ैरज़रूरी चीज़ें साथ न लाएं। इस से बिला-वजह देर होती है। वक़्त ज़ाए होता है। इंतेज़ामिया का भी वक़्त ज़ाए होता है और लोगों का भी वक़्त ज़ाए होता है। लोगों को लाईन में खड़े हो कर इंतेज़ार करना पड़ता है फिर वे इंतेज़ामिया को इल्ज़ाम देते हैं हालाँकि क़सूर बाअज़ दफ़ा जलसा में शामिल होने वालों का होता है क्योंकि लोगों की चीज़ें और सामान इतना ज़्यादा होता है जैसा कि मैंने कहा कि चैकिंग में देर लग सकती है।

फिर एक मोमिन को एक हुक्म और इरशाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह है कि तुम लोग विच्छेद करने वाले से भी ताल्लुक़ क़ायम रखो। जो तुम्हें नहीं देता उसे भी दो। यह नहीं है कि ज़रूरत के वक़्त तुम्हारे काम नहीं आया तो उस को ज़रूरत पड़ने पर बदला लेते हुए तुम भी उसकी मदद न करो। फ़रमाया कि जो तुम्हें बुरा-भला कहता है उससे भी दरगुज़र करो।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 5 पृष्ठ 373 हदीस 15703 प्रकाशन आलेमुल कुतुब बेरूत 1998 ई.)

अतः यहां तो बुरा-भला कहने का सवाल नहीं है यहां तो एक फ़र्ज़ की अदायगी है जो कारकुनान के ज़िम्मा लगाई गई है। यहां अगर अनजाने में किसी कारकुन से कोई ग़लती हो जाए या चैकिंग के दौरान देर लग जाए या किसी के कार्ड पर कोई एतराज़ पैदा हो जाए तो बुरा मनाने की बजाय हौसला दिखाना चाहिए। ये बातें जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई हैं यह बड़े हौसले की ओर मार्गदर्शन करती हैं।

अगर बड़ा हौसला पैदा हो जाए तो समस्त बदमज़गियाँ और झगड़े ख़त्म हो जाएं।

अतः मेहमानों और डयूटी देने वालों, दोनों को कहता हूँ कि उनका फ़र्ज़ है कि बड़ा हौसला दिखाएंगे। चैकिंग करने वालों को भी ख़्याल रखना चाहिए कि आने वाले मेहमानों के लिए जिस हद तक सहूलत मुहय्या कर सकते हैं वे मुहय्या करने की कोशिश करें और इसके लिए यदि इंतेज़ामिया को ज़्यादा कारकुन भी लगाने पढ़ें तो लगाने चाहिएं विशेषता भीड़ के समय में।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार कोशिश यह करनी चाहिए कि आपसी प्रेम और भाईचारे की उदाहरण बन जाएं।

(उद्धृत शहादतुल् क़ुरआन, रुहानी ख़ज़ायन भाग 6 पृष्ठ 394)

और यही अल्लाह तआला ने मोमिनों के बारे में फ़रमाया है। अतः छोटी-छोटी बातों पर उलझने की बजाय कोशिश यह करें कि हमने अपनी ज़िंदगी के उद्देश्य को हासिल करने की कोशिश करनी है। जो रकू और सजूद और इबादतों से हासिल होता है और अल्लाह की याद से प्राप्त होता है। हर मेहमान जो यहां आया है अपने सफ़र को विशेषता अल्लाह की खातिर बनाने की कोशिश करे। कारकुन भी याद रखें और मेहमान भी याद रखें कि कुछ ग़ैर अज़ जमाअत भी यहां आए होते हैं, ग़ैर मुस्लिम भी यहां आए होते हैं। हर व्यक्ति मेहमान भी और मेज़बान भी अगर आला अख़लाक़ का प्रदर्शन कर रहे होंगे तो यह ख़ामोश तब्लीग़ कर रहे होंगे और इस से फिर ग़ैरों पर बहुत अच्छा असर पड़ता है और फिर उनको इस्लाम की तरफ़ तवज्जा पैदा होती है और इस्लामी तालीम की ख़ूबियों से वे प्रभावित होते हैं।

फिर एक ज़रूरी चीज़ यह है कि यहां आने वाले एक दूसरे को सलाम करने को भी रिवाज दें।

इस तरफ़ भी ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करें। बड़ी बरकत वाली और पाकीज़ा दुआ है जो हमें सिखाई गई है। जब मेज़बान और मेहमान एक दूसरे को सलाम करते हैं तो जहां वे हर एक किस्म के ख़ौफ़ और फ़िक्र से आज़ाद होते हैं वहां एक ऐसी दुआ जो एक दूसरे को फ़ैज़याब करने वाली होती है वे दे रहे होते हैं। अतः अल्लाह तआला ने हमें जो ये पाकीज़ा और बाबरकत दुआ सिखाई है इस की तरफ़ इन दिनों में बहुत तवज्जा दें ताकि हम हर तरफ़ सलामती और प्यार और मुहब्बत फैलाने वाले बन जाएं और यह माहौल विशेषता अल्लाह के लिए प्यार और मुहब्बत और भाई चारे का माहौल बन जाए।

और हमें कोशिश करनी चाहिए कि हर किस्म की भौतिक या शारीरिक इच्छा से अपने आपको पाक करें और इन दिनों में एक इन्क़िलाब अपनी ज़िंदगीयों में पैदा करने की कोशिश कर रहे हों । हमारे लिए हर विषय में सहाबा रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जीवनी है। मेहमानों के आला अख़लाक़ का तो यह हाल था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में सहाबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुव्वत-ए-क़ुदसी की वजह से यह कोशिश करते थे कि क़ुरआन-ए-करीम के हर हुक्म पर अमल करने की कोशिश करें और जैसा कि क़ुरआन-ए-करीम का यह हुक्म है कि अगर कोई मेहमान किसी के घर में जाए और घरवाला कहे कि वापस चले जाओ। उस वक़्त में फ़ारिग़ नहीं तो ख़ुशी से वह वापस चला जाए। बड़ा दिल दिखाए। एक सहाबी कहते हैं कि मैं कोशिश करता था कि मैं अल्लाह तआला के इस हुक्म को भी पूरा करने वाला बन जाऊं और चाहता था कि किसी के घर जाऊं और घरवाला मुझे कहे कि वापस चले जाओ। अभी वक़्त नहीं है मेरे पास और मैं ख़ुशी से अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने के लिए वहां से वापस आ जाऊं और अल्लाह तआला की रज़ा हासिल करने वाला बन जाऊं लेकिन कहते हैं मुझे बावजूद कोशिश के कभी यह अवसर उपलब्ध नहीं आया कि किसी ने मुझे घर से निकाला हो।

(उद्धृत तफ़सीर दुर्रे मंसूर भाग 5 (अनुवादक पृष्ठ 116 प्रकाशन ज़ियाउल् क़ुरआन पब्ली केशन्ज़् लाहौर 2006 ई.)

अतः यह वह आला अख़लाक़ थे जो मेज़बानों के भी थे, जो घर वालों के भी थे और जो किसी के घर जाने वाले जो मेहमान थे उनके भी थे। अतः यह बड़ा हौसला होनी चाहिए। इन्सान में जब यह बड़ा हौसला हो तो फिर छोटी छोटी बातें जो हैं उनको इन्सान वैसे ही नज़रअंदाज कर देता है।

मैंने एक दूसरे को सलाम करने के बारे में बात की। इस बारे में एक और बात यह भी याद रखें कि :

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि सलाम को रिवाज देने के लिए तुम चाहे किसी को जानते हो या नहीं जानते उस को सलाम करो।

(सही बुख़ारी किताबुल् ईमान बाब (अफ़शाअल् इस्लाम मिनल इस्लाम हदीस : 28)

सलाम को रिवाज देने के लिए इस हद तक जाओ कि चाहे तुम किसी को जानते हो या नहीं जानते तुम उसे सलाम करो। अतः जब यह सलामती का रिवाज पैदा होगा तो मेहमान जो ग़ैर अज़ जमाअत हैं और जो नोमोबाईन हैं उनके दिलों पर एक अच्छा असर क़ायम होगा और इस पाक माहौल से वह ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाने वाले और इस्लाम की ख़ूबसूरत तालीम की तारीफ़ करने वाले बन जाऐंगे। और जो नोमोबाईन इस पर अमल करने वाले होंगे वे ज़्यादा अहसन रंग में निज़ाम में जज़ब होने वाले बन जाऐंगे। उनको शिकवा होता है कि कुछ जगह हमें जज़ब नहीं किया जाता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक वाक़िया पेश करता हूँ। जब जंग मुक़द्दस की तक़रीब थी जो कि मुस्लमानों और ईसाईयों में मुबाहिसा हुआ था। इस दौरान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जहां ठहरे हुए थे वहां एक दफ़ा आप के साथ एक वाक़िया पेश आया। कारकुनान कहते हैं कि एक दिन मेहमानों की कसरत की वजह से मुंतज़मीन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के लिए खाना रखना भूल गए या पेश करना भूल गए और रात का एक हिस्सा गुज़र गया आप को खाना नहीं दिया गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़े इंतेज़ार के बाद जब खाने के बारे में पूछा तो सब जो इंतेज़ाम करने वाले थे वे तो बड़े परेशान हो गए। सब के हाथ पैर फूल गए कि यह क्या हो गया है। खाना रखा हुआ नहीं है। बाज़ार भी अब बंद हो चुके हैं। बहुत देर हो गई है वहां से ला नहीं सकते। बहरहाल जब यह सूरत-ए-हाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इलम में आई, जब आप को पता लगा तो आप ने फ़रमाया कि इस तरह घबराहट और तकलीफ़ की ज़रूरत क्या है। दस्तरख़वान पर देखो, जहां खाना खाया हुआ है देखो! लोगों का कुछ बचा कुचा पड़ा होगा वही काफ़ी है। जो पड़ा है वही ले आओ। दुस्तरख़वान जब देखा गया तो वहां सिवाए रोटियों के चंद टुकड़ों के कुछ भी नहीं था। सालन इत्यादि भी नहीं था। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमारे लिए यही काफ़ी है और आप अलैहिस्सलाम ने वही खा लिया।

(उद्धृत सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अज़ हज़रत याक़ूब अली इर्फ़ानी साहब रज़ियल्लाहु अन्हो हिस्सा सोम पृष्ठ 322)

तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जो सबसे बढ़कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आशिक़ और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर अमल करने वाले थे यह उनका उदाहरण था। अतः हमें भी जो आप की जमाअत में शामिल होने का दावा करते हैं सब्र और हौसला और शुक्रगुज़ारी के ये भावनाएं हर वक़त दिखाने की ज़रूरत है। अगर इन तीन दिनों में किसी की मेहमान-नवाज़ी में कोई कमी भी रह गई हो तो इस को अंदेखा करें और इंतेज़ामिया को ज़्यादा मोरिद-ए-इल्ज़ाम न ठहराएँ।

कोशिश तो इंतेज़ामिया की यही होती है कि ज़्यादा से ज़्यादा बेहतरी पैदा की जाए लेकिन मेहमानों की तरफ़ से भी किसी किस्म की नाराज़गी और शिकवा नहीं होना चाहिए।

यदि नेक नियत से इस्लाह की ख़ातिर तवज्जा दिलानी चाहते हैं और जो मश्वरे देना चाहते हैं तो बाद में वे अपने मश्वरे भेज सकते हैं ताकि अगले वर्षों में बेहतरी पैदा हो और नए आने वालों के लिए भी ज़्यादा सहूलतों का इंतेज़ाम हो।

इसके अतिरिक्त मैं इस बात की तरफ़ भी तवज्जा दिलानी चाहता हूँ कि इन दिनों में विभिन्न प्रकार की नुमाइशें लगी हुई हैं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के यूरोप और यू.के के दौरे पर इस वर्ष सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। इसके लिए यू.के की जमाअत ने मर्कज़ी आरकाईवज़ के साथ मिलकर एक नुमाइश लगाई है। विभिन्न तसावीर की नुमाइश है। इसको ज़रूर देखें। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के बारे में यू.के की सौ साल की तारीख़ है। इसी तरह रिव्यू आफ़ रिलीजंज़ की प्रदर्शनी है। आरकाईवज़ और तब्लीग़ के विभागों की नुमाइश है। मख़ज़न-ए-तसावीर की प्रदर्शनी है। ये सारी परदर्शनियाँ देखने वाली हैं। मुझे उम्मीद है कि अच्छी तरह उन्होंने सेट की होंगी। जो फ़ारिग़ औक़ात हैं उनमें इधर-उधर वक़्त ज़ाए करने के बजाए उन परदर्शनियों को देखने की कोशिश करें।

इसी तरह इंतेज़ामिया को यह भी हिदायत दी गई है कि दुनिया में अब कुछ स्थानों पर कोविड के मरीज़ ज़्यादा नज़र आने लग गए हैं यहां भी कुछ स्थानों पर लोगों में बढ़ोतरी हुई है तो यहां मुख़्तलिफ़ जगहों से लोग आए हुए हैं और हो सकता है कोई कोविड के जरासीम भी लेकर आया हो। इसलिए गैटस पर, दाख़िली रस्तों पर होमियोंपैथिक दवाई जो हिफ़्ज़-ए-मातक़द्दुम के है, preventive है इसको देने का इंतेज़ाम किया गया है। कोशिश करें कि हर व्यक्ति जो गेट से अंदर दाख़िल हो अगर इंतेज़ामिया उनको वह दवाई दे तो वह आराम से ले लें बल्कि ख़ुद मांग के लें। अल्लाह तआला सबको हर किस्म की बीमारी से महफ़ूज़ रखे। हर उपद्रव से भी सुरक्षित रखे।

इसी तरह सैक्योरिटी के इंतेज़ाम है पहले भी मैंने कहा। सैक्योरिटी के इंतेज़ाम में हर साल मैं कहता रहता हूँ कि

सबसे बढ़कर सैक्योरिटी हमारी यही है कि अपने दाएं बाएं नज़र रखें और कोशिश करें कि हर एक दूसरे को देख रहा है। ये सबसे बड़ी सैक्योरिटी होती है। अगर ये हो जाए तो फिर किसी मुख़ालिफ़ को, दुश्मन को किसी भी किस्म का उपद्रव फैलाने का अवसर नहीं मिलता।

इसी तरह ग़ैर ज़रूरी सामान बैग इत्यादि कहीं पड़ा हुआ देखें तो इंतेज़ामिया को सूचना दे दें और अगर किसी व्यक्ति की कोई संदिग्ध हरकात देखें तब भी इंतेज़ामिया को बता दें। बहरहाल इन दिनों में सैक्योरिटी की तरफ़ विशेष ध्यान दें लेकिन सबसे बड़ा हथियार हमारे पास अल्लाह तआला की पनाह है और इस पनाह को हासिल करने के लिए दुआओं और ज़िक्र-ए-इलाही की तरफ़ हमें ज़ोर देना चाहिए। इस तरफ़ विशेषता इन तीन दिनों में ज़ोर दें।

अल्लाह तआला आप सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि इस पर अमल करने वाले हों और यह जलसे को हर लिहाज़ से हर एक के लिए बाबरकत हो।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

पाँचवाँ : शिर्क की पांचवीं किसम यह है कि ख़ुदा तआला की वह विशेष सिफ़ात जो इस ने बंदों को नहीं दीं जैसे मुर्दा को ज़िंदा करना या कोई चीज़ पैदा करना या ख़ुदा तआला का अज़ली और ग़ैर-फ़ानी होना ऐसे उमूर में ख़ुदा तआला की विशेषताओं को मिटा दिया जाए और उन सिफ़ात में किसी ग़ैर को शरीक कर लिया जाए चाहे उस अक़ीदा की बिना पर ही शरीक किया जाए कि ख़ुदा ने अपनी मर्ज़ी और अपने इज़न के साथ यह सिफ़ात या उनका कुछ हिस्सा किसी ख़ास व्यक्ति को दे दिया है, यह भी शिर्क ही होगा।

छठा : शिर्क की छट्टी किसम यह है कि इन्सान ख़ुदा तआला के बनाए हुए अस्बाब को बिलकुल नज़रअंदाज कर दे और यह समझे कि किसी व्यक्ति या किसी चीज़ ने बिन उन अस्बाब के प्रयोग करने के जो ख़ुदा तआला ने किसी विशेष काम के लिए निर्धारित किए हैं अपनी ख़ास ताक़त के माध्यम से इस काम को पूरा कर दिया है। उदाहरणतः ख़ुदा तआला ने आग को जलाने के लिए पैदा किया है। अब अगर कोई व्यक्ति यह ख़्याल करे कि किसी व्यक्ति ने अपनी ज़ाती ताक़त से बिना दूसरे माध्यम के इस्तिमाल करने के जो कानून-ए-क़ुदरत में रखे गए हैं आग लगा दी तो यह शिर्क होगा लेकिन इस में मिसमरेजम इत्यादि शामिल नहीं क्योंकि ये ताक़तें ख़ुद क़ानून-ए--क़ुदरत के अंदर शामिल हैं किसी व्यक्ति के ज़ाती कमालात नहीं।

सातवाँ शिर्क की सातवीं किसम यह है कि यह ख़्याल किया जाए कि ख़ुदा को किसी बंदा से ऐसी मुहब्बत है कि वह उस की हर एक बात मान लेता है क्योंकि उस के माने ये बनते हैं कि वे बंदा ख़ुदाई ताक़तें रखता है।

(तफ़सीर-ए-कबीर भाग 6 पृष्ठ 43 प्रकाशन कादियान 2010)

★ ★ ★

मुजस्समे यदि किसी नेक उद्देश्य के लिए बनाए जा रहे हैं जिससे इल्मी या अध्यात्मिक तरक़्क़ी उद्देश्य है तो फिर उनके बनाने में कोई हर्ज नहीं लेकिन यदि केवल नमूद-ओ-नुमाइश और दिखावे के लिए बनाए जा रहे हैं तो ग़लत और नाजायज़ काम है एक हदीस में आया है कि पहला सिपाही जिसने क़ुस्तुनतुनिया में क़दम रखा जन्नत में जाएगा, क्या यह दरुस्त है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त 29)

प्रश्न : श्रीमान इंचार्ज साहब बंगला डैसक ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किया कि बंगलादेश में क़ौमी हीरोज़ के मुजस्समे बनाने का रुजहान पैदा हो रहा है। क्या इस्लाम में किसी हीरो का मुजस्समा बनाना जायज़ है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 13 दिसंबर 2020 ई. में इस प्रश्न के उत्तर में निम्नलिखित हिदायात फ़रमाई

उत्तर : क़ुरआन-ए-क़रीम से पता चलता है कि इस्लाम से क़बल नबियों के समय में नेक उद्देश्य के लिए तसावीर और मुजस्समा साज़ी का काम किया जाता था जैसा कि हज़रत सुलेमान अलैहिस्सलाम के सम्बन्ध में आता है कि एक फ़िर्क़ा जिन उनकी इच्छा अनुसार उनके लिए मुजस्समे बनाते थे। (सूरः सबा : 14) इसी तरह अहादीस में भी आता कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आने से पहले अहल-ए-किताब के पास विभिन्न नबियों की तसावीर थीं, जिन में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तस्वीर भी थी।

(अल् -तारीख़ अल-कबीर मुअल्लिफ़ा अबू अब्दुल्लाह इस्माईल बिन इब्राहीम अल्जाफ़ी अल् किसम अव्वल पृष्ठ179)

इसके अतिरक्त बच्चों के खेलने के लिए गुड़ियाँ और गड्डे इत्यादि भी होते थे, जैसा कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की कुछ रिवायत से पता चलता है कि बचपन में उनके पास भी खिलौनों में गुड़ियाँ और परों वाले घोड़े थे, जिन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने भी देखा और आपने उनके बारे में किसी किस्म की नापसंदीदगी का इज़हार नहीं फ़रमाया।

(सुंन अबी दाऊद, किताब अल् अदब, बाब फ़ी लअबुल बिनात)

लेकिन इसके साथ यह बात भी पेश-ए-नज़र रखनी बहुत आवश्यक कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अह्द मुबारक में चूँकि शिर्क और बुतपरस्ती अपने इंतेहा को पहुंची हुई थी, इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने प्रत्येक काम को जिससे हल्का सा भी शिर्क और बुतपरस्ती की तरफ़ मीलान हो सकता था, अत्यन्त नापसंद फ़रमाया और सख़्ती से उसकी हौसलाशिकनी फ़रमाई। इसलिए घर में लटके हुए पर्दा या बैठने वाले गदीले पर तसावीर देख कर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सख़्त नागवारी का इज़हार फ़रमाया और उन्हें उतारने और फाड़ने का इरशाद फ़रमाया।

(सही बुख़ारी, किताब अल् अदब, बाब मा यजोज़ि मिनल ग़ज़ब अल् शिद्दतिल् अमरिल्लाह, किताब बिदअतुल खिल्क बाब इज़ा क़ाल अहदोकुम आमीन वल् मलाएकतों विसमाए) इसी प्रकार हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस ज़माने के अनुसार मुसव्वेरी के माध्यम से बनाई जाने वाली तसावीर की सख़्ती से मनाही फ़रमाई और मुसव्वेरी के काम को नाजायज़ और मौरिद-ए-अज़ाब क़रार दिया। (बुख़ारी ,किताब अल् बियू, बाब बैअतुल् तसावीर अल्लती लैयस फ़ीहा रूह) सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बतौर हक़म-ओ-अदल अपने आक़ा-ओ-मुता सय्यदना हज़रत-ए-अक़्दस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के नक़श-ए-कदम पर चलते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अत्यन्त पुरहिकमत इरशाद إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ की रोशनी में इस मसला का यह हल पेश फ़रमाया कि जो काम किसी नेक उद्देश्य के लिए किया जाए वह जायज़ है लेकिन वही काम बग़ैर किसी नेक उद्देश्य के नाजायज़ होगा। इसलिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने तब्लीग़ और पैग़ाम-ए-हक़ पहुंचाने की ख़ातिर एक तरफ़ अपनी तस्वीर की इशाअत की आज्ञा दी, जिस पर इस ज़माने के तथाकथित मुलाऊं ने इस नेक उद्देश्य की मुख़ालेफ़त करते हुए बुरे बुरे पैरायों में उसे वर्णन किया और इस के ख़िलाफ़ दुनिया को बहकाया तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इन मुख़ालेफ़ीन का उत्तर देते हुए फ़रमाया कि यदि ये लोग तस्वीर को इतना ही बुरा समझते हैं तो फिर शाही तस्वीर वाला रुपया और दूनियां और चविन्नयाँ अपने घरों और जेबों से बाहर क्यों नहीं फेंक देते और इसी तरह अपनी आँखें भी क्यों निकलवा नहीं देते क्योंकि उनमें भी तो वस्तुओं की आकृति होती है। तो दूसरी तरफ़ हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने इसी काम को किसी जायज़ उद्देश्य के बग़ैर करने पर अत्यन्त नापसंद फ़रमाया और उसे बिद्दत क़रार देते हुए इस पर सख़्त नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया। इस मसला के इन दोनों पहलूओं को वाज़ेह करते हुए हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "मैं इस बात का सख़्त मुख़ालिफ़ हूँ कि कोई मेरी तस्वीर खींचे और उस को बुत परस्तों की तरह अपने पास रखे या शाय करे। मैंने कदापि ऐसा हुक्म नहीं दिया कि कोई ऐसा करे और मुझसे ज़्यादा बुतपरस्ती और तस्वीर परस्ती का कोई दुश्मन नहीं होगा। लेकिन मैंने देखा है कि आजकल यूरोप के लोग जिस व्यक्ति की तालीफ़ को देखना चाहें प्रथम इच्छामंद होते हैं कि इस की तस्वीर देखें क्योंकि यूरोप के मुल्क में फ़िरासत के इलम को बहुत तरक़्क़ी मिली है। और अक्सर उन की केवल तस्वीर को देखकर शनाख़्त कर सकते हैं कि ऐसा मुद्दई सादिक़ है या काज़िब। और वे लोग बबायस हज़ार-हा कोस के फ़ासिला के मुझ तक नहीं पहुंच सकते और न मेरा चेहरा देख सकते हैं इसलिए इस देश के अहल फ़िरासत के माध्यम से तस्वीर मेरे अंदरूनी हालात में ग़ौर करते हैं। कई ऐसे लोग हैं जो उन्होंने यूरोप या अमरीका से मेरी तरफ़ चिट्ठियां लिखी हैं और अपनी चिट्ठियों में तहरीर किया है कि हमने आपकी तस्वीर को ग़ौर से देखा और इलम-ए-फ़िरासत के माध्यम से हमें मानना पड़ा कि जिसकी यह तस्वीर है वह काज़िब नहीं है।" (ज़मीमा बराहीन अहमदिया हिस्सा पंजुम, रुहानी खज़ायन भाग 21 पृष्ठ 365-366)

इसी तरह फ़रमाया وَإِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّات और मेरा मज़हब ये नहीं है कि तस्वीर की हुर्मत क़तई है। क़ुरआन शरीफ़ से साबित है कि फ़िर्क़ा जिन् हज़रत सुलेमान के लिए तस्वीरें बनाते थे और बनीइस्राईल के पास लंबे समय तक नबियों की तस्वीरें रहीं जिनमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भी तस्वीर थी और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की तस्वीर एक पारचा रेशमी पर जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने दिखलाई थी।"

(ज़मीमा बराहीन अहमदिया हिस्सा पंजुम, रुहानी खज़ायन, भाग 21 पृष्ठ 365)

आप अलैहिस्सलाम मज़ीद फ़रमाते हैं "अफ़सोस कि ये लोग बिलाव वजह बुद्धि के विपरीत बातें करके मुख़ालिफ़ों को इस्लाम पर हंसी का अवसर देते हैं। इस्लाम ने समस्त व्यर्थ के काम और ऐसे काम जो शिर्क के सहायक हैं हराम किए हैं न ऐसे काम जो इन्सानी इलम को तरक़्क़ी देते और अमराज़ की पहचान का माध्यम से ठहरते और फ़िरासत को हिदायत से क़रीब कर देते हैं। लेकिन

इसके होते हुए मैं कदापि पसंद नहीं करता कि मेरी जमाअत के लोग बग़ैर ऐसी आवश्यकता के जो कि बैचन करती है वे मेरे फ़ोटो को आम तौर पर प्रकाशित करना अपना कसब और पेशा बना लें क्योंकि इसी तरह रफ़्ता-रफ़्ता बिदआत पैदा हो जाती हैं और शिर्क तक पहुँचती हैं इस लिए मैं अपनी जमाअत को इस जगह भी नसीहत करता हूँ कि जहां तक उनके लिए सम्भव हो ऐसे कामों से दस्त कश रहें। कुछ साहबों के मैंने कार्ड देखे हैं और उनकी पुश्त के किनारा पर अपनी तस्वीर देखी है। मैं ऐसी इशाअत का सख़्त मुख़ालिफ़ हूँ और मैं नहीं चाहता कि कोई व्यक्ति हमारी जमाअत में से ऐसे काम का मुर्तक़िब हो। एक सही और मुफ़ीद ग़रज़ के लिए काम करना और बात है और हिंदूओं की तरह जो अपने बुज़ुर्गों की तस्वीरें जाबजा दरोदीवार पर नसब करते हैं यह और बात है। हमेशा देखा गया है कि ऐसे व्यर्थ के काम शिरक करने का माध्यम बन जाते हैं और बड़ी बड़ी ख़राबियां उनसे पैदा होती हैं।"

(ज़मीमा बराहीन अहमदिया हिस्सा पंजुम, रुहानी खज़ायन, भाग 21 पृष्ठ 367)

अतः बंगलादेश में बनाए जाने वाले ये मुजस्समे यदि किसी नेक उद्देश्य के लिए बनाए जा रहे हैं जिससे इलमी या अध्यात्मिक तरक़्क़ी उद्देश्य है तो फिर उनके बनाने में कोई हर्ज नहीं लेकिन यदि केवल नमूद-ओ-नुमाइश और दिखावे के लिए बनाए जा रहे हैं तो ग़लत और नाजायज़ काम है।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत फ़ातमह रज़ियल्लाहु अन्हा से हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के संबंध में दरयाफ़त फ़रमाया कि तुम्हारे चचा का बेटा कहाँ है? इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अबू तालिब के लिए भी चचा का शब्द प्रयोग फ़रमाया है और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत खतीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए चची का शब्द प्रयोग फ़रमाया है। इस शब्द की कुछ वज़ाहत फ़र्मा दी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 13 दिसंबर 2020 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया।

उत्तर : हर समाज के कुछ रस्म-ओ-रिवाज और रोज़मर्रा ज़िंदगी में प्रयोग होने वाले मुहावरे होते हैं, जो इसी मुआशरे को सामने रखकर समझे जा सकते हैं। इसलिए कुछ ख़ानदानों में पिता का किसी व्यक्ति से जो रिश्ता होता है ख़ानदानी रस्म-ओ-रिवाज या मुहावरा के तहत वही रिश्ता औलाद के लिए भी प्रयोग हो जाता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो चूँकि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चचा के बेटे थे, इसलिए उसी मुआशरती रिवाज के तहत हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपनी बेटी से दरयाफ़त किया कि तुम्हारे चचा का बेटा कहाँ है।

फिर अरब में यह يَابْنَ عَمِّ और يَابْنَ أَخِي अर्थात् हे मेरे चचा के बेटे और हे मेरे भतीजे इत्यादि शब्द के प्रयोग का आम रिवाज था और अब तक है। इसलिए बड़ी उमर का व्यक्ति अपने से छोटी उमर के व्यक्ति को सम्बोधित करने के लिए يَابْنَ أَخِي। अर्थात् हे मेरे भतीजे के शब्द का प्रयोग करता है और इसी तरह पत्नी अपने पति का नाम लेने की बजाय يَابْنَ عَمِّ। अर्थात् हे मेरे चचा के बेटे के शब्द प्रयोग करती है।

जहां तक हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के हज़रत खतीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए चची के शब्द प्रयोग करने का ताल्लुक़ है तो अरबी में फूफी और चची दोनों के लिए उम्मती का शब्द प्रयोग होता है। लगता है आपने किसी जगह उम्मती का शब्द पढ़ कर उस का अनुवाद चची समझ लिया है जबकि हज़रत खतीजा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के हवाले से इस शब्द का अनुवाद फूफी बनेगा। क्योंकि हज़रत खतीजा रज़ियल्लाहु अन्हा और हज़रत अबूतालिब का नसब पांचवें दर्जा पर किसी बिन कलाब पर आपस में मिलता है और इस लिहाज़ से हज़रत खतीजा रज़ियल्लाहु अन्हा रिश्ता में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की फूफी लगती थीं।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में पत्र लिखा कि कुछ दोस्तों की तरफ़ से उसके कज़न की वफ़ात पर नामुनासिब रवैय्या का इज़हार किया गया है, जिस पर उसे शदीद दुख है। तथा उस मित्र ने हुज़ूर अनवर से दरयाफ़त किया कि क्या इस्लाम की मुख़ालेफ़त पर फ़ौत होने वाले किसी अज़ीज़ के लिए दुआ करने से क़ुरआन-ए-करीम हमें मना फ़रमाता है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 13 दिसंबर 2020 ई. में इस बारे में निम्नलिखित राहनुमाई फ़रमाई :

उत्तर : आपके कज़न की वफ़ात पर यदि किसी अहमदी ने किसी नामुनासिब रवैय्या का इज़हार किया है तो निसंदेह उस अहमदी ने ग़लत किया है। प्रत्येक इन्सान की वफ़ात के बाद उसका मुआमला ख़ुदा तआला के साथ हो जाता है, वह जो चाहे उस के साथ सुलूक करे किसी दूसरे व्यक्ति को इस बारे में कोई राय क़ायम करने का कोई इख़्तेयार नहीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस अमर की वज़ाहत करते हुए फ़रमाते हैं :

"प्रत्येक व्यक्ति का ख़ुदा तआला से अलग-अलग हिसाब है। अतः प्रत्येक को अपने आमाल की इस्लाह और जांच पड़ताल करनी चाहिए। दूसरों की मौत तुम्हारे वास्ते इबरत और ठोकर से बचने का बाइस होनी चाहिए न कि तुम हंसी ठट्ठे में बसर कर के और भी ख़ुदा तआला से ग़ाफ़िल हो जाओ।" (मल्फ़ूज़ात, भाग सोम, पृष्ठ : 217)

बाक़ी जैसा कि आपने आबिद ख़ान साहब की डायरी के हवाले से अपने पत्र में लिखा है, मेरा उत्तर तो आपने पढ़ ही लिया है कि हम उसे किसी किस्म का कोई ख़ुदाई निशान क़रार नहीं दे सकते क्योंकि आपके कज़न का न तो जमाअत अहमदिया के साथ कोई मुक़ाबला चल रहा था और न ही उसने जमाअत को कोई ऐसा चैलेंज दिया था जिससे मुक़ाबला समझा जाए।

इस्लाम किसी इन्सान से नफ़रत नहीं सिखाता बल्कि उसके फ़ेअल से नापसंदीदगी का इज़हार करता है। इसलिए क़ुरआन-ए-करीम में हज़रत लूत अलैहिस्सलाम अपने मुख़ालेफ़ीन को सम्बोधित करके फ़रमाते हैं कि मैं तुम्हारे अमल को नफ़रत से देखता हूँ।

(सूरः अल् शोरा : 169) इसी तरह अल्लाह तआला ने मोमिनों को हिदायत फ़रमाई कि जब तुम अल्लाह तआला की आयतों से इस्तिहज़ा होता सुनो तो उन हंसी करने वालों के साथ उस वक़्त न बैठो। (सूरः निसा : 141) मानो इन्सानों से नफ़रत नहीं बल्कि उनके अमल से बेज़ारी के इज़हार की शिक्षा दी गई है।

अतः इस्लाम की शिक्षा प्रत्येक मुआमले में मुकम्मल और अत्यन्त ख़ूबसूरत है। इस्लाम तो सख़्त तरीन मुआनिद की मौत पर भी ख़ुश होने की शिक्षा नहीं देता बल्कि उसकी मौत पर भी एक सच्चे मोमिन को इसलिए दुख होता है कि काश ये व्यक्ति हिदायत पा जाता। अहमदियत के सख़्त तरीन दुश्मन और हमारे आक़ा-ओ-मुता सय्यदना हज़रत-ए-अक़्दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ज़ात अतहर के बारे में बदज़ुबानी करने वाले इस्लाम के दुश्मन पण्डित लेखराम की इलाही भविष्यवाणियों के अनुसार जब हलाकत हुई तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसकी हलाकत पर भी उसकी क़ौम के लोगों से इज़हार-ए-हमदर्दी करते हुए फ़रमाया "एक इन्सान की जान जाने से तो हम दर्दमंद हैं और ख़ुदा की एक भविष्यवाणी पूरी होने से हम ख़ुश भी हैं। क्यों ख़ुश हैं? केवल क़ौमों की भलाई के लिए। काश वे सोचें और समझें कि इस आला दर्जा की सफ़ाई के साथ कई वर्ष पहले ख़बर देना ये इन्सान का काम नहीं है। हमारे दिल की इस वक़्त अजीब हालत है। दर्द भी है और ख़ुशी भी। दर्द इसलिए कि यदि लेखराम रुजू करता ज़्यादा नहीं तो इतना ही करता कि वे बदज़बानियों से बाज़ आजाता तो मुझे अल्लाह तआला की क़सम है कि मैं उसके लिए दुआ करता। और मैं उम्मीद रखता था कि यदि वे टुकड़े टुकड़े भी किया जाता तब भी ज़िंदा हो जाता।"

(सिराज-ए-मुनीर, रुहानी खज़ायन, भाग 12 पृष्ठ 28)

बाक़ी जहां तक इस्लाम की मुख़ालेफ़त पर मरने वाले किसी व्यक्ति के लिए दुआ करने की बात है तो इस्लाम ने केवल मुशरिक जो ख़ुदा तआला से खुली खुली दुश्मनी का इज़हार करे, उसके लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत करने से मना फ़रमाया है बाक़ी किसी के लिए दुआ करने से नहीं रोका।

(सूरः अल् तौबा : 114)

प्रश्न : एक महिला ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में तहरीर किया कि मैं ने अपने बेटे के साथ अपने छोटे

भाई को भी तीस वर्ष पहले दूध पिलाया था। अब मेरे बड़े भाई के बेटे के साथ मेरी बेटी का रिश्ता तजवीज़ हुआ है। क्या यह रिश्ता हो सकता है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 14 दिसंबर 2020 में निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया :

उत्तर : दूध पिलाने के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का इरशाद है कि जो रिश्ते नसब की बिना पर हराम हैं यदि रज़ाअत की बिना पर क़ायम हो जाएं तो रज़ाअत की वजह से उन रिश्तों की भी हुर्मत क़ायम हो जाती है।

(सही बुख़ारी, किताब अल् शहादात) लेकिन शर्त यह है कि बच्चा ने अपनी दूध पीने की उमर में पाँच मर्तबा सैर हो कर दूध पिया हो। (सही मुस्लिम, किताब अअल् रिहयाज़)

इसके साथ यह बात भी मद्द-ए-नज़र रखनी आवश्यक है कि रज़ाअत की हुर्मत केवल दूध पीने वाले बच्चा और आगे उसकी नसल के साथ क़ायम होती है, इस दूध पीने वाले बचा के दूसरे बहन भाईयों पर इस रज़ाअत का कोई असर नहीं होता। अतः इस लिहाज़ से आपकी बेटी का रिश्ता आपके इस भाई के बेटे से जिसने आपका दूध नहीं पिया हुआ, होने में कोई हर्ज नहीं।

अल्लाह तआला दोनों ख़ानदानों के लिए यह रिश्ता बहुत मुबारक फ़रमाए, बच्चों की तरफ़ से आपकी आँखें ठंडी रखे और हमेशा आपको अपने फ़ज़्लों से नवाज़ता रहे। आमीन।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में इस्तिफ़सार किया कि मैं ने सुना है कि एक हदीस में आया है कि पहला सिपाही जिसने क़ुस्तुनतुनिया में क़दम रखा जन्नत में जाएगा, क्या यह दरुस्त है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 14 दिसंबर 2020 ई. में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अमन-ओ-आश्ती और प्यार मुहब्बत की शिक्षा के साथ दुनिया में अवतरित फ़रमाया। लेकिन जब मुख़ालेफ़ीन-ए-इस्लाम अपनी मुख़ालेफ़त में हद से गुज़र गए तो अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को भी तुरंत जिहाद की आज्ञा दी। (सूरत अल-हज्ज : 40) जिसके तहत मुस्लमानों ने अल्लाह तआला की ताईद-ओ-नुसरत की बदौलत जहां मुस्लमानों पर हमला करने वालों को मुंहतोड़ उत्तर दिया वहां मुस्लमानों ने अल्लाह तआला के इज़न से ऐसे इलाक़ों और देशों पर भी चढ़ाई की जिनमें मुस्लमानों की पर अमन जमाअत को मालिया-मेट करने के लिए साज़िशें तैयार की जातीं और दूसरे क़बायल और इलाक़ों को मुस्लमानों के ख़िलाफ़ उकसाया जाता था।

अल्लाह तआला से ख़बर कर पा कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ज़ुलम-ओ-बरबरीयत के ख़िलाफ़ लड़ी जाने वाले इन जंगों में मुस्लमानों की फ़तह-ओ-ज़फ़र के साथ सफ़लता की कई भविष्यवाणियां फ़रमाई हैं। उनमें से एक भविष्यवाणी यह भी थी कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस ज़माने की दो बड़ी ताक़तों क़ैसर और किसरा में से क़ैसर की ईसाई हुकूमत के शहर के ख़िलाफ़ मेरी उम्मत के जो लोग जंग के लिए निकलेंगे वे जन्नती होंगे।

(बुख़ारी, किताबुल् जिहादअल् सीरत)

इसी तरह एक और जगह हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क़ुस्तुनतुनिया को फ़तह करने वाला लश्कर और इस का अमीर क्या ही अच्छा लश्कर और क्या ही अच्छा अमीर होगा।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल, हदीस नंबर 18189)

इन दोनों अहादीस में वर्णित भविष्यवाणी भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला की तरफ़ से अता होने वाली अन्य इलाही पेश ख़बरियों की तरह अपने वक़्त पर पूरी शान के साथ पूरी हुई।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी ऐस लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़्ल इंटरनैशनल 25 फ़रवरी 2021)

★ ★ ★

दारुस्सनाअत कादियान (Ahmadiyya Vocational Training Centre) में वर्ष 2024-2025 के प्रवेश लिए दाख़िला शुरू है

दारुस्सनाअत कादियान का आरंभ हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मंज़ूरी और विशेष राहनुमाई से 2010 ई. में हुआ। विभाग का विशेष उद्देश्य अहमदी विद्यार्थियों को हुनर-मंद बनाना और टेकनीकल कोर्स विशेषता रोज़गार के अवसर पैदा करना है। दारुस्सनाअत कादियान सरकारी विभाग NSIC दिल्ली और ISO रजिस्टर्ड है। जिसमें एक वर्ष के निम्नलिखित कोर्स करवाए जाते हैं।

Plumbing, Electrician, Welding, Motor Vehicle, AC & Refrigerator, Diesel Mechanic, Computer Applications

कादियान के बाहर से आने वाले अहमदी विद्यार्थियों के लिए hostel और mess का इंतेज़ाम उपलब्ध है । रहने और food की कोई फ़ीस नहीं है। केवल कोर्स की बोर्ड फ़ीस आसान किस्तों में ली जाती है। ऐसे अहमदी नौजवान जो अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके या 8th और 10th के बाद टेक्नीकल कोर्स करने के ख़ाहिशमंद हों प्रवेश के लिए जल्द संपर्क करें। अहमदी बच्चों की दीनी शिक्षा का भी इंतेज़ाम मौजूद है। इसके अतिरिक्त रोज़ाना English Speaking और Personality Developmentकी क्लास भी ली जाती है। नए सैशन 2024-2025 के लिए दाख़िला शुरू हो गया है। जिसकी क्लासिज़ 16 जुलाई से शुरू होंगी।

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बरज़ Email Id पर संपर्क कर सकते हैं।

darulsanaat.qadian@gmail.com
9872725895, 8077546198
(प्रिंसिपल दारुस्सनाअत कादियान)

★ ★ ★

129वां जलसा सालाना क़ादियान

27, 28, और 29 दिसम्बर 2024 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 129वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 27,28,29 दिसंबर 2024 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है। जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन।

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

1 अक्तूबर 2022 ई शनिवार का दिन शेष रिपोर्ट

मस्जिद फ़तह अज़ीम के उद्घाटन की तक़रीब

आज मस्जिद फ़तह अज़ीम के उद्घाटन के हवाले से मस्जिद के बैरूनी अहाता में लगी मारकी में एक तक़रीब का एहतमाम किया गया था। इस तक़रीब में मुख़्तलिफ़ जमाअतों और देशों से आने वाले जमाअती ओहदेदारान और नुमाइंदों के अतिरिक्त 161 ग़ैर मुस्लिम और ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों ने शिरकत की। इन मेहमानों में वए तमाम मेहमान भी शामिल थे जिन्हों ने इस तक़रीब से पूर्व हुज़ूर अनवर के साथ इन्फ़रादी तौर पर और ग्रुप की सूरत में मुलाक़ात की थी।

उसके अतिरिक्त Mayor of Glen Ellyn मार्क Senak साहिब, Glen Ellyn के साबिक़ मेयर Mike Formento साहिब, ज़ायन कमिशनर Chris Fischer साहिब, Lake County बोर्ड मैंबर Gina Roberts सप्रेटिंडनट Dr. Jesse Rodriguez ज़ायन हाई स्कूल प्रिंसिपल Zackary Livingston भी इस तक़रीब में शामिल थे।

इसके अतिरिक्त इस तक़रीब में डाक्टरज़, प्रोफ़ैसर्ज़, टीचरज़, वुकला, जर्नलिस्ट मीडीया के नुमाइंदे, स्कियोरटी के इदारों के नुमाइंदे और ज़िंदगी के मुख़्तलिफ़ विभागों से संबंध रखने वाले मेहमान शामिल थे।

प्रोग्राम के मुताबिक़ 6 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मारकी में तशरीफ़ लाए। हुज़ूर अनवर की आमद से पूर्व समस्त मेहमान अपनी नशिस्तों पर बैठ चुके थे। प्रोग्राम का आग़ाज़ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ मुबारक Kukoy साहिब ने की। इसके बाद उसका अंग्रेज़ी अनुवाद श्रीमान नसीरुल्लाह साहिब ने पेश किया। इसके बाद श्रीमान अमजद महमूद ख़ान साहब (नैशनल सेक्रेटरी उमूर-ए-ख़ारेजा, यू एस ए)ने परिचयी ऐडरैस पेश किया

ज़ायन शहर के मेयर का एतेहासिक स्वागत और हुज़ूर की ख़िदमत में शहर की चाबियाँ पेश करना

इसके बाद ज़ायन शहर के मेयर ऑनरेबल Billy Mckinne ने स्वागतीय ऐडरैस पेश करते हुए कहा :

आप सब का शुक्रिया आप सब पर सलामती हो और ज़ायन के ख़ूबसूरत शहर में ख़ुश-आमदीद मेरे लिए जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के विशव्यापी मार्गदर्शक हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब को मस्जिद फ़तह अज़ीम के उद्घाटन के अवसर पर ज़ायन शहर में ख़ुश-आमदीद कहना इंतेहाई एज़ाज़ की बात है। ख़लीफ़तुल मसीह का आज शाम इस तक़रीब में शिरकत के लिए हज़ारों मील का सफ़र तै कर के आना निसन्देह हमारे लिए बहुत ही गौरव की बात है।

यहां ज़ायन में हमारा माटो Historic Past and Dynamic Future है। हमारे शहर के क़लब में यह ख़ूबसूरत मस्जिद इस माटो की एक आला मिसाल है। मेरी ख़ाहिश और दुआ है कि यह इबादत-गाह हमारे माज़ी और भविष्य के दरमयान एक पुल का काम करे। यह जानते हुए कि यह मस्जिद ऐसी शानदार ईमान से भरपूर कम्यूनिटी के नमाज़ियों से भरी हुई है, मुझे ज़ायन शहर के भविष्य के लिए भी उम्मीद दिलाती है अगर हमें एक बेहतर ज़ायन, एक बेहतर शहर, एक बेहतर रियासत, एक बेहतर मलिक और एक बेहतर दुनिया बनानी है तो हमें समस्त नसलों और अक़ीदों के साथ मिलकर काम करना होगा। जब मैं इस पैग़ाम को देखता हूँ जो अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी हमारे शहर में लेकर आई है तो मुझे बहुत ख़ुशी होती है। यह मुस्लमानों की वह जमाअत है जिसका नसबुल् ऐन "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" है। यह एक ऐसी जमाअत है जो इस्लाम के पैग़ंबर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ताज़ीम करती है जिन्हों ने ईसाईयों के साथ अह्द किया था कि उनके पैरोकार गिरजा-घरों की मुरम्मत में ईसाईयों की मदद करेंगे और गिरजा-घरों की हर किस्म के ख़तरात से हिफ़ाज़त और दिफ़ा के लिए अपनी जानें भी क़ुर्बान करेंगे। अतः आज जमाअत अहमदिया मुस्लिमा इस शहर "ज़ायन" में इसी मसलक और अक़ीदा का मुजस्सम इज़हार कर रही है। इस जमाअत ने अपने ख़लीफ़ा की बाबरकत क़ियादत में अमन, इन्साफ़, आलमी इन्सानी हुक़ूक़ और इन्सानियत की ख़िदमत के पैग़ाम के साथ समस्त धर्मों के लोगों तक रसाई हासिल की है, लिहाज़ा अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी की तरफ़ से इस शहर में जो शानदार ख़िदमात अंजाम दी गईं हैं और इस शहर की तरक़्क़ी और उसके लोगों की फ़लाह-ओ-बहबूद को बेहतर बनाने के लिए जो काम किए गए हैं उन पर मैं आपका दिल से शुक्रगुज़ार हूँ। और हम इस शहर की चाबियाँ इज़्ज़त मआब ख़लीफ़ा की ख़िदमत में पेश करते हैं।

इस ऐडरैस के बाद उन्होंने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में ज़ायन शहर की चाबी पेश की।

मैंबर आफ़ अलीनाईस जनरल का ऐडरैस

इसके बाद मैंबर आफ़ Illinois जनरल असैंबली ऑनरेबल Joyce Mason ने अपना ऐडरैस पेश करते हुए कहा :

यहां ज़ायन में ''मस्जिद फ़तह अज़ीम' के उद्घाटन की इस तारीख़ी तक़रीब का हिस्सा बनना मेरे लिए सम्मान की बात है। ज़ायन अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी के लिए तारीख़ी एहमियत का हामिल है। 61वीं के रियास्ती नुमाइंदे के तौर पर मैं इस अवसर से विशेषता प्रभावित हुई हूँ क्योंकि यह न केवल अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी और उसकी रुकनीयत के लिए बल्कि पूरे शहर और उसके आस-पास के इलाक़े के लिए एक ख़ास लम्हा है। मैं इन समस्त मेहमानों को मुबारकबाद देना चाहती हूँ जो दुनिया-भर से सफ़र कर के यहां पहुंचे। यह वाक़ई इस शहर के लिए एक ख़ास दिन है। ज़ायन एक ऐसी जगह थी जिसकी बुनियाद पिछली सदी के आग़ाज़ में इलैगज़ेंडर डोई ने रखी थी और जो उसे एक थीव क्रिटिक शहर बनाना चाहता था जिसके दरवाज़े उसके मानने वालों के इलावा बाक़ी प्रत्येक के लिए बंद थे। लेकिन आज हम एक मुख़्तलिफ़ तस्वीर देख रहे हैं। आज ज़ायन शहर मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब से ताल्लुक़ रखने वाले पच्चीस हज़ार लोगों का घर है। यह मस्जिद द्वेष रखने वालों के बारे में मोमिनों की दुआओं की फ़तह की अलामत है। मैं अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी को इस शानदार कामयाबी पर मुबारकबाद पेश करती हूँ। कम्यूनिटी और हम सब विशेषता ख़ुश-क़िस्मत हैं कि इज़्ज़त मआब ख़लीफ़ा ने इस उद्घाटनिय तक़रीब की सदारत करने के लिए इतना लंबा सफ़र किया और मेरे लिए उनसे मिलना एक नाक़ाबिल-ए-यक़ीन सम्मान की बात है।

अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी का नारा "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" अक्सर अपने सामने रखती हूँ क्योंकि यह सिर्फ एक नारा नहीं है बल्कि यह उन अहमदी मुस्लमानों के लिए ज़िंदगी गुज़ारने का एक तरीक़ा है। इसलिए मैं इस कम्यूनिटी और आप सबकी तरफ़ खिंची चली जाती हूँ। दरहक़ीक़त इस कम्यूनिटी के बहुत से अफ़राद हैं जिन्हें में अपना ख़ानदान समझती हूँ। इज़्ज़त मआब ख़लीफ़ा अमन के फ़रोग़ के हवाला से एक सरकरदा मुस्लिम रहनुमा हैं, जो अपने ख़ुत्बात, लैक्चरज़, किताबों और ज़ाती मुलाक़ातों में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की ख़िदमत इन्सानियत, आलमी इन्सानी हुक़ूक़ और एक पुरअम्न और इंसाफ़ पसंद मुआशरे के क़ियाम पर मुश्तमिल इक़तेदार को प्रवान चढ़ा रहे हैं। उन्होंने अमन के क़ियाम पर-ज़ोर देते हुए दुनिया-भर के क़ानून साज़ों और अन्य रहनुमाओं से बात की है। आप महिलाओं के हुक़ूक़ के भी अलमबरदार हैं, जैसा कि मैं ज़ाती तौर पर ज़ायन की अहमदी मुस्लिम महिलाओं के हवाला से तसदीक़ कर सकती हूँ। यह कम्यूनिटी अपनी महिलाओं अराकीन का एहतिराम करती है और महिलाओं अराकीन अपनी जमाअत का लाज़िम-ओ-मल्ज़ूम हिस्सा हैं और इस मस्जिद की तामीर इस बात का ज़िंदा सबूत है क्योंकि तामीरात के लिए जमा की गई रक़म का तक़रीबन नसफ़ अहमदी मुस्लिम महिलाओं की थी।

उन्होंने कहा ज़ायन शहर की ख़ुशक़िसमती है कि अम्न पसंद और दूसरों की ख़िदमत करने वाली जमाअत ने यहां आबाद होने और इतनी ख़ूबसूरत मस्जिद बनाने का फ़ैसला किया है। मेरी दिली तमन्ना है कि यह मस्जिद ना सिर्फ इस शहर बल्कि

चारों अतराफ़ के लिए उम्मीद की किरण बन जाए। यह ताल्लुक़ात को मज़बूत बनाने और ज़ायन और इस से बाहर अमन और इन्साफ़ के क़ियाम के लिए बाहमी ज़राए तलाश करने में मदद करे। मैं इस कम्यूनिटी को नई मस्जिद के उद्घाटन पर मुबारकबाद देते हुए ऐवान में एक क़रारदाद पेश कर रही हूँ। मैं इस ख़ुशी के दिन का हिस्सा बनने और इस ख़ास जमाअत का हिस्सा बनने पर शुक्रगुज़ार हूँ। बहुत बहुत मुबारकबाद और शुक्रिया

ऑनरेबल राजा कृष्णमूर्ति का इसके बाद ऑनरेबल राजाKrishn Moorthi ने अपना ऐडरैस पेश किया उन्हों ने कहा : आप सब पर सलामती हो। आपके साथ यहां शामिल होना एज़ाज़ की बात है। यह एक हक़ीक़ी एज़ाज़ है। मैं इज़्ज़त मआब ख़लीफ़ा के विषय में और उनकी कामयाबीयों के बारे में घंटों बोल सकता हूँ। मैं आपकी यहां आमद से बहुत मुतास्सिर हुआ हूँ और आज का दिन तारीख़ में याद रखा जाएगा। यहां आने से पहले मैंने हुज़ूर के साथ चंद मिनट गुज़ारे थे और मैंने उन्हें अमरीका में अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी के बारे में भी बताया। वह बेहतरीन लोगों में से कुछ हैं जिनसे आप कभी मिलेंगे। वह आम तौर पर जुनूबी एशियाई कम्यूनिटी में होते हैं। इसलिए में उनके बहुत क़रीब हूँ क्योंकि में एक हिन्दुस्तानी नज़ाद अमरीकी हूँ। अमरीका में जुनूबी एशियाई कम्यूनिटी जिसका अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी एक लाज़िमी अंग है, बहुत कामयाब है। यह अमरीका में सबसे तेज़ी से बढ़ती हुई नसली अक़ल्लीयत है। यह सबसे ज़्यादा ख़ुशहाल और बेहतरीन तालीम याफ़ता है। अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी के लोगों में से कुछ ऐसे लोगों से भी आप को मिलेंगे जिन्हों ने अपने आपको हस्पतालों के क़ियाम से लेकर स्कूलों तक, ख़ून के अतयात की मुहिम, ज़रूरतमंद लोगों की मदद करने से लेकर क़ुदरती आफ़ात में इमदादी कार्यवाहियां करने तक अपने आपको ख़िदमत के लिए वक़्फ़ कर दिया है। ये लोग इन इक़दार का मुजस्सम हैं जिनकी वे तब्लीग़ करते हैं। आख़िर में एक नज़्म का हवाला देना चाहूँगा जो मुझे बहुत पसंद है, जो मेरे नज़दीक अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी का ख़ुलासा है। यह नज़्म कुछ इस तरह है।

मैंने अपनी रूह को तलाश किया
लेकिन अपनी रूह को नहीं देख सका
मैंने अपने ख़ुदा को तलाश किया
लेकिन ख़ुदाई का सिर्फ इशारा ही मिला
मैंने अपने भाई को ढूंडा
तो मुझे तीनों चीज़ें मिल गईं

मुझे यक़ीन है कि अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी जो कि अमरीका और दुनिया की बेहतरीन बिरादरीयों में से एक है, इन्सानियत की ख़िदमत में अपने आपको वक़्फ़ कर देती है। इसलिए मैं हुज़ूर का शुक्रिया अदा करता हूँ। मैं इस लिए भी आपका शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप तशरीफ़ लाए और हमें वक़्त से नवाज़ा और आज रात इस प्रोग्राम में शिरकत के लिए भी आप सब का शुक्रिया। ख़ुदा आप पर फ़ज़ल फ़रमाए। शुक्रिया।

डाक्टर केतरीना लेंटोस् का ऐडरैस

इसके बाद डाक्टरKatrina Lantos Swett जो कि Lantos फ़ाउंडेशन फ़ार हियूमन राईट्स ऐंड जस्टिस की चेयरमैन हैं ने अपना ऐडरैस पेश करते हुए कहा : जैसा कि मुझसे पहले मुक़र्ररीन ने इस बात का इज़हार किया है कि आज शाम यहां उनकी मौजूदगी उनके लिए कितनी ख़ुशी और गौरव की बात है, इसी तरह मैं भी इस बात का इज़हार करना चाहती हूँ कि आज शाम की ग़ैरमामूली तक़रीब में शमूलियत मेरे लिए गौरव की बात है। मुझे बे-इंतेहा ख़ुशी है कि मैं जमाअत अहमदिया को अब कई सालों से जानती हूँ और मुझे ऐसा महसूस होता है कि जब भी मैं अहबाब-ए-जमाअत के साथ मिलती हूँ तो मेरी रूहानियत में इज़ाफ़ा होता है। मैं कभी ऐसे किसी दूसरे मज़हबी गिरोह से नहीं मिली जो हू-बहू अपनी इस तालीम का मुजस्सम हो जिसका वह परचार करते हैं और जो रोज़ाना अपनी ज़िंदगियों में मौजूद आला उसूलों और नमूनों की पैरवी करते हूँ और मेरा ख़्याल है कि इस कमरे में बैठे हुए समस्त लोग मेरे इस ख़्याल से इत्तिफ़ाक़ करेंगे कि यह विशेषता और ऐसी उलुल-अज़मी ख़ुदा ही इनायत कर सकता है या फिर हुज़ूर जैसी एक अज़ीम शख़्सियत भी इस का माध्यम बन सकती है और मैं अपने आपको इंतेहाई ख़ुश-क़िस्मत समझती हूँ कि आज यहां आप सब के साथ हूँ।

जब मेरे दोस्त अमजद साहिब जो कि जमाअत अहमदिया के लिए ख़िदमत बजा ला रहे हैं, ने यहां ज़ायन में होने वाले प्रोग्राम के बारे में है मुझे बताया तो मैं यह सुनकर हैरत-ज़दा हो कर रह गई थी। ये बात ऐसी हैरानकुन है कि इस ज़माना में जबकि मोबाइल फ़ोन, कम्पयूटर और अन्य माध्यमों से प्रचार भी था नहीं उस ज़माने में भी इस मुबाहले के मुक़ाबले को इतनी तशहीर मिली।

इस मुक़ाबला में उलूहियत और इन्सानियत और मुआशरती लिहाज़ से दो मुख़्तलिफ़ नज़रियात पेश किए गए थे। एक नज़रिया डाक्टर जान डोई का था जिसकी बुनियाद नफ़रत, बाहमी तफ़रीक़ और द्वेष पर रखी गई थी और दूसरा नज़रिया जो कि बानी जमाअत अहमदिया मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब का था जो कि बाहमी इज़्ज़त और बुर्दबारी पर मुश्तमिल था और एक ऐसी शख़्सियत की तरफ़ से था जिन्हों ने इसका नतीजा पूर्णतः अल्लाह के हाथ में छोड़ रखा था। फिर नतीजतन हम जानते हैं कि इस मुबाहला मैं किस की फ़तह हुई।

और निसन्देह यह मस्जिद जिसका अब उद्घाटन होने जा रहा है, जिसका नाम फ़तह अज़ीम मस्जिद रखा गया है, उसका मतलब ही एक अज़ीमुश्शान फ़तह है जो कि इस मुबाहला में जमाअत अहमदिया और बानी जमाअत अहमदिया के हिस्सा में आई। लेकिन मेरे ख़्याल में हमें यह कहना चाहिए कि वह न केवल जमाअत अहमदिया बल्कि इन्सानियत की भी फ़तह थी, क्योंकि इस से बाहमी इज़्ज़त, मुहब्बत और तहम्मुल की भी फ़तह हुई। जिसका उदाहरण हम अब इस अज़ीमुश्शान जमाअत में देखते हैं।

उन्हों ने हज़रत-ए-यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाक़िया तफ़सील से वर्णन करते हुए कहा कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों ने इसके लिए बहुत बुरा किया था लेकिन ख़ुदा तआला ने उनके लिए भला किया। बाद में उसने अपने भाईयों को माफ़ कर दिया और केवल इतना कहा कि तुम लोगों ने तो बुरा चाहा था लेकिन ख़ुदा ने भला कर दिया।

अब जब में यह ख़ूबसूरत मस्जिद देखती हूँ जो इसी मुबाहला वाली जगह अर्था ज़ायन में तामीर की गई है, तो मुझे वही यूसुफ़ अलैहिस्सलाम वाला वाक़िया याद आता है कि जान डोई ने बुरा चाहा था लेकिन ख़ुदा ने भला कर दिया और अज़ीमुश्शान फ़तह जमाअत अहमदिया के हिस्सा में आई।

उन्हों ने कहा हमें आज शाम उन अहमदियों को भी याद रखना होगा जो कि दुनिया के एक दूसरे हिस्से में पाकिस्तान में बैठे हुए हैं और अपने मज़हब की वजह से रोज़ाना ना-काबिल वर्णन ज़ुल्मो-सितम और अत्याचार और दुश्मनी का सामना करते हैं। जो कि हुकूमत वक़्त के होते हुए भी अपने आपको अकेला महसूस करते हैं। क्योंकि हुकूमत उनको हिफ़ाज़त मुहय्या करने से इंकार करती है। पुलिस उनको तहफ़्फ़ुज़ फ़राहम नहीं करती और दूसरे मज़हबी रहनुमा अपने पैरोकारों को तरग़ीब दिलाते हैं कि वे उन पर बोलें।

चंद दिन पहले जमाअत अहमदिया से ताल्लुक़ रखने वाले दोस्त ने एक नई किस्म के तशद्दुद के हवाले से इत्तिला दी है कि एक रहनुमा अपने पैरोकारों को गर्भवती अहमदी महिलाओं को निशाना बनाने की तरग़ीब दिला रहा है ताकि मज़ीद अहमदी बच्चे पैदा होने से रोके जाएं। यह इंतेहाई ख़ौफ़नाक जरायम हैं और बुनियादी इन्सानी हुक़ूक़ की पामाली है। लिहाज़ा मेरे ख़्याल में सबसे अहम बात यह है कि जमाअत जान ले कि दीगर अहमदी अहबाब के साथ साथ हम लोग भी उनके साथ खड़े हैं जो कि इस कम्यूनिटी से ताल्लुक़ नहीं रखते

मैं अपने अहमदी भाईयों और बहनों से यह कहना चाहती हूँ क्योंकि हम निसन्देह आपस में भाई बहन ही हैं, हम सब जो आपकी जमाअत से अक़ीदत रखते हैं और आपकी अच्छाईयों और तालीमात से आश्ना हैं और पाकिस्तान में मौजूद आपके भाईयों की तकालीफ़ से अवगत हैं, हम आपसे यह कहना चाहते हैं कि "जहां आप जाऐंगे, वहीं हम जाऐंगे और जहां आप रुकेंगे वहीं हम रुकेंगे। हम आपके साथ होंगे और आख़िर तक आपके साथ खड़े रहेंगे हमें आपसे अक़ीदत है और आज इस अज़ीम तक़रीब में शमूलीयत हमारे लिए बाइस-ए-इफ़्तिख़ार है और मैं आप सबकी मशकूर हूँ कि आपने मुझे इसका हिस्सा बनने का सौभाग्य दिया।

इसके बाद श्रीमान अमीर साहिब जमाअत अहमदिया यू ऐस ए श्रीमान साहिबज़ादा मिर्ज़ा मग़फ़ूर अहमद साहिब ने डाइस पर आकर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत में ख़िताब फ़रमाने की दरख़ास्त की

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ख़िताब

6 बजकर 55 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अंग्रेज़ी ज़बान में मेहमानों से ख़िताब फ़रमाया। इस का उर्दू अनुवाद पेश किया जा रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम के साथ अपने ख़िताब का आग़ाज़ फ़रमाया और समस्त सम्मानित मेहमानान को अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहु कहा :

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : सबसे पहले तो मैं आप सब का जो आज शाम हमारे साथ यहां शामिल हैं शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। यह तक़रीब कोई दुनियावी तक़रीब नहीं बल्कि ख़ास मज़हबी

तक़रीब है जिसका इनइक़ाद एक इस्लामी जमाअत ने किया है। इसलिए इस तक़रीब में शमूलियत आप लोगों की कुशादा दिली, बर्दाश्त और वुसअत नज़र की दर्पण है। अतः आज यहां ज़ायन में हमारी नई मस्जिद के उद्घाटन के अवसर पर हमारे साथ शामिल होने पर मैं दिल से आप सब का मशकूर हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : इस शहर में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का क़ियाम कई दहाईयां पहले हुआ था लेकिन हमारे पास बाक़ायदा कोई मस्जिद नहीं थी जहां हम इबादत कर सकते। इसलिए आज का दिन हमारी जमाअत के लिए बड़ा अहम और बहुत ख़ुशी का बायस है। निसन्देह समस्त मज़हबी जमाअतों के लिए एक ऐसी जगह का मुहय्या होना बहुत अहम है जहां इस मज़हब के लोग जमा हो कर इबादत कर सकें। जहां तक इस्लाम का ताल्लुक़ है तो हमारे नज़दीक मस्जिद के दोहरे फ़ायदे हैं। एक तो यह कि मस्जिद मुस्लमानों के लिए इकट्ठे हो कर ख़ुदा तआला की इबादत करने और उनके मज़हबी फ़रायज़ को अदा करने का अवसर फ़राहम करती है। जैसा कि इस्लाम मुस्लमानों को रोज़ाना पाँच मर्तबा इबादत करने का हुक्म देता है। इस के इलावा मस्जिद के तामीर करने का दूसरा बड़ा फ़ायदा यह है कि मस्जिद के ज़रीया समाज के अन्य लोगों को इस्लामी तालीमात से परिचित करवाया जा सकता है। अगर वे लोग जो ख़ालिस हो कर मस्जिद में इबादत करते हैं, वे सही अर्थों में इस्लामी तालीमात पर ग़ौर-ओ-फ़िक्र करें और उन तालीमात को अमली तौर पर पेश करें। तिब्बी तौर पर मुक़ामी लोगों के अंदर इस्लाम के विषय में जानने का शौक़ और जुस्तजू पैदा होगी। इस्लाम के बारे में उनके इलम-ओ-फ़हम में इज़ाफ़ा होगा और मुस्लमानों को अपने अंदर पुरअमन तौर पर रहते हुए और मुआशरा का मुसबत हिस्सा बनते देखकर उनके दिलों में जो ख़ौफ़ या तहफ़्फुज़ात हैं वे भी दूर हो जाऐंगे। इं शा अल्लाह। अतः यह दो उद्देश्य हैं जिनको पूरा करने के लिए जमाअत अहमदिया दुनिया-भर में मसाजिद तामीर करती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आप में से बाअज़ यह भी सोच रहे होंगे कि अहमदी मुस्लमानों और दीगर मुस्लमानों में क्या फ़र्क़ है? क़ुरआन-ए-करीम और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस हवाला से एक अज़ीमुश्शान भविष्यवाणी है। यह मुक़द्दर था कि कई सदीयां गुज़र जाने के बाद मुस्लमान इस्लामी तालीमात से दूर हट जाऐंगे और आख़िर कार मुस्लमानों की अक्सरियत इस्लामी तालीमात को छोड़ देगी और सिर्फ नाम के ही मुस्लमान रह जाऐंगे। साथ ही अल्लाह तआला और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी ख़ुशख़बरी दी कि इस रुहानी ज़वाल के दौर में अल्लाह तआला इस्लाम की असल तालीमात को अज़ सिर-ए-नौ ज़िंदा करने के लिए एक मौऊद मुस्लेह को भेजेगा जिसको मसीह मुहम्मदी का ख़िताब दिया जाएगा। वह मसीह दुनिया को बताएगा कि इस्लामी तालीमात तो अमन, मुहब्बत और हम-आहंगी की तालीमात हैं। वह मसीह लोगों को तलक़ीन करेगा कि एक दूसरे के साथ मिलकर पुर अमन तौर पर ज़िंदगी गुज़ारें और एक दूसरे के साथ मज़हबी इख़्तेलाफ़ात से बाला हो कर बाहमी प्यार और मुहब्बत के ताल्लुक़ात क़ायम करें। इसलिए अहमदी मुस्लमान होने के नाते हमारा पुख़्ता यक़ीन है कि इस जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम वही मौऊद मसीह और महदी हैं जिनके विषय में क़ुरआन-ए-करीम और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया सिलसिला अहमदिया के संस्थापक ने सारी ज़िंदगी अपने पैरोकारों को प्यार, हमदर्दी और एहसान पर मुश्तमिल इस्लामी तालीम पर अमल पैरा रहते हुए तब्लीग़ इस्लाम करने का पैग़ाम पहुंचाने और लोगों के दिल-ओ-दिमाग़ जीतने की तलक़ीन फ़रमाई। हक़ीक़त तो यह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने ऐलान किया कि वह मसीह मूसवी की तरह इस्लामी तालीमात फैलाएगे। इसलिए हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बनीनौ इन्सान से हमदर्दी और प्यार का इज़हार फ़रमाया। आप अलैहिस्सलाम का हर लफ़्ज़ और अमल शांति के बनाएं रखने और मुआशरा में आपसी प्रेम क़ायम करने के लिए था। आप अलैहिस्सलाम ने अपने पैरोकारों को तालीम दी कि इस्लाम का असल मतलब ही अमन और सलामती है। आप अलैहिस्सलाम के ज़हूर के बाद इस्लाम अपनी असली रुहानी हालत की तरफ़ लौट आएगा और एक दिन दुनिया इस्लाम को एक प्यार, मुहब्बत, बुर्दबारी हम-आहंगी और अमन के मज़हब के तौर पर जानेगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वाज़िह किया कि क़ुरआन-ए-क़रीम की तालीमात के मुताबिक़ इस्लाम के आग़ाज़ में जो जंगें लड़ी गईं वे केवल दिफ़ाई थीं और सख़्त तरीन मज़ालिम को रोकने के लिए लड़ी गईं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दौर मुबारक या आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चार ख़ुलफ़ाए राशिदीन के दौर में एक मर्तबा भी ऐसा नहीं हुआ कि इस्लामी फ़ौजों ने अज़ ख़ुद जंग शुरू की हो या किसी किस्म का ज़ुलम या ना इंसाफ़ी की हो बल्कि जिस भी जंग या लड़ाई में मुस्लमान शामिल हुए उसका उद्देश्य ज़ुलम-ओ-बरबरीयत को रोकना था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आजकल नए दौर में जहां जुग़राफ़ियाई तनाज़आत दिन-ब-दिन दुनिया में तबाही-ओ-बर्बादी लेकर आ रहे हैं वहां हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हर किस्म की मज़हबी जंग बंद है। इसलिए मुस्लमानों या किसी भी मज़हब के लोगों के लिए मज़हब के नाम पर जंग करना किसी तौर पर भी जायज़ नहीं था। इसलिए यह वाज़िह हो कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का उद्देश्य इलाक़ों, मुल्कों या शहरों पर क़बज़ा करना या अक़्वाम को ख़त्म करना नहीं है। न ही इन देशों में जहां हमारे पैग़ाम को बड़ी संख्या ने क़बूल किया कभी किसी ने सयासी ताक़त या दुनियावी असर-ओ-रसूख़ हासिल करने के लिए नहीं किया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमारा वाहिद उद्देश्य और इच्छा यही है कि प्यार के ज़रीया बनीनौ इन्सान के दिलों को जीता जाए और उनको ख़ुदा तआला के क़रीब किया जाए ताकि वे इसके हक़ीक़ी बंदे बन सकें और एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा कर सकें। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक बहुत ही ख़ूबसूरत शेअर में फ़रमाया कि उन्हें किसी दुनियावी रुत्बा या सयासी ताक़त की ख़ाहिश नहीं है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

मुझको क्या मुल्कों से मेरा मुलक है सबसे जुदा
मुझको क्या ताजों से मेरा ताज है रिज़वान-ए-यार

दुनियावी यासी ताक़तों से पूर्ण विमुखता ही जमाअत अहमदिया मुस्लिमा का शुरू से गौरव रहा है और आइन्दा भी रहेगा। हम तो सिर्फ इस्लाम की मुहब्बत और अमन की तालीमात फैलाना चाहते हैं जो कि हम पिछले 130 से अधिक वर्षों से कर रहे हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हर साल दुनिया-भर से हज़ारहा लोग हमारी जमाअत में शामिल होते हैं। हमारा किसी मज़हब या क़ौम या शख़्स से कोई बुग़ज़-ओ-इनाद या लड़ाई नहीं है। बल्कि जो लोग अल्लाह तआला के मुक़ाबिल खड़े होते हैं और उस के मज़हब को तबाह करना चाहते हैं, उनके लिए भी हमारा रद्द-ए-अमल यह नहीं होता कि उनके ख़िलाफ़ हथियार उठा लिए जाएं या उन पर किसी किस्म का जबर किया जाए। बल्कि उसके बरअक्स हमारा रद्द-ए-अमल केवल यही होगा कि हम कामिल आजिज़ी के साथ ख़ुदा तआला के हुज़ूर झुकेंगे। हमारा वाहिद हथियार तो दुआ ही है और हमें यक़ीन है कि ख़ुदा तआला हमारी दुआओं को सुनता है। यक़ीनन हमारी जमाअत की एक सौ तेंतीस साला तारीख़ इस हक़ीक़त पर गवाह है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जहां तक आज़ादी मज़हब और आज़ादी ज़मीर का ताल्लुक़ है तो हम इस बात पर पुख़्ता यक़ीन रखते हैं कि मज़हब और अक़ीदा प्रत्येक का ज़ाती मुआमला है और प्रत्येक को अपना रास्ता इख़्तेयार करने का हक़ है। हमारा यह कोई नया मोंक़फ़ नहीं है जिसे हमने अभी अपनाया हो बल्कि हमारे इस मोंक़फ़ की बुनियाद क़ुरआन-ए-करीम की असल तालीमात हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आपको मालूम होगा कि हाल ही में मलिका बर्तानिया एलिज़ाबैथ दोम वफ़ात पा गई है और उसका बेटा चार्ल्स सोम बादशाह बना है। यू के में बादशाह के आफिशल शब्दों में एक Defender of the Faith भी है। बहुत से अवसरों पर किंग चार्ल्स ने समस्त मज़ाहिब की तकरीम का इज़्हार किया है। उसने ये ख़ाहिश भी की कि Defender of the Faith की बजाय उसकी पहचान बतौर Defender of all faiths हो। बिलाशुबा यह काबिल-ए-तारीफ़ वर्णन है और किंग चार्ल्स की कुशादादिल तबीयत और सबको साथ लेकर चलने की सोच की अक्क़ासी करता है। जबकि तख़्त सँभालने पर बाअज़ प्रभावियों ने इस ख़्याल का इज़हार किया कि टाइटल में ऐसी तबदीली को आलमी तौर पर ईसाई कम्यूनिटी में सराहा नहीं जाए गाया कुछ ग़ैर ईसाई भी उसे नापसंद करें। इस हवाला से एक सुर्ख़ी इस तरह आई कि "बादशाह की तमाम मज़ाहिब के तहफ़्फ़ुज़ की ख़ाहिश शायद ख़ामख़याली ही साबित हो।"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जहां बाअज़ यह ख़्याल करते हैं कि मज़हबी हम-आहंगी को तक़वियत देने की यह कोशिशें रायगां जाएँगी, मेरी नज़र में समस्त मज़ाहिब का तहफ़्फ़ुज़ और हक़ीक़ी मज़हबी आज़ादी का क़ियाम दरअसल दुनिया में अमन क़ायम करने की बुनियाद है। इस हवाला से मैं अमरीकी हुकूमत के इस इक़दाम को सराहता हूँ कि स्टेट डिपार्टमैंट के तहत ऑफ़िस

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 29 August 2024 Issue No. 35

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

आफ़ इंटरनैशनल रीलीजस फ़्रीडम क़ायम किया गया है जो कि अब आलमी सतह पर मज़हबी आज़ादी को फ़रोग़ देने के लिए हर साल इंटरनैशनल कान्फ्रैंस का एहतिमाम है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दुनिया में अमन क़ायम करने के विषय में क़ुरआन-ए-करीम की सूरत अल् हज आयत 40 और 41 में आलमी मज़हबी आज़ादी क़ायम करने का अज़ीमुश्शान और बुनियादी उसूल वर्णन किया गया है। इन आयात करीमा में अल्लाह फ़रमाता है कि "क़िताल की इजाज़त केवल उन लोगों को दी जाती हैजिन के ख़िलाफ़ जंग की गई है क्योंकि उन पर ज़ुलम किए गए और निसन्देह अल्लाह उनकी मदद पर पूरी क़ुदरत रखता है। वे लोग जिन्हें उनके घरों से नाहक़ निकाला गया महज़ इस बिना पर कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब है।"

फिर फ़रमाता है "और अगर अल्लाह की तरफ़ से लोगों का दिफ़ा उनमें से कुछ को बाअज़ दूसरों से भिड़ा कर न किया जाता तो राहिब ख़ाने मुनहदिम कर दिए जाते और गिरजे भी और यहूद के मुआबिद भी और मसाजिद भी जिन में बकसरत अल्लाह का नाम लिया जाता है और यक़ीनन अल्लाह ज़रूर उसकी मदद करेगा जो उसकी मदद करता है। निसन्देह अल्लाह बहुत ताक़तवर (और) कामिल ग़लबा वाला है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इन दोनों आयात करीमा में जहां अल्लाह तआला ने पैग़ंबर इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को दिफ़ाई जंग की इजाज़त दी है वहां यह भी वाज़िह तौर पर स्पष्ट कर दिया कि यह इजाज़त इसलिए दी गई है कि ज़ुलम करने वाले ने दुनिया से मज़हबी आज़ादी ख़त्म करने की कोशिश की है। जंग की इजाज़त केवल मुस्लमानों और उनकी मसाजिद की हिफ़ाज़त के लिए या दीन को फैलाने के लिए नहीं दी गई बल्कि क़ुरआन-ए-करीम स्पष्ट तौर पर फ़रमाता है कि अगर मुस्लमानों के ख़िलाफ़ जंग करने वालों को ताक़त से रोका नहीं जाता तो कोई गिरजा, राहिब ख़ाना, मंदिर, मस्जिद और कोई माबद महफ़ूज़ नहीं रहता।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : इसलिए क़ुरआन-ए-करीम ही वह वाहिद अल्लाह का कलाम है जो न सिर्फ समस्त मज़ाहिब-ओ-अक़ायद के पैरोकारों को मुकम्मल मज़हबी आज़ादी फ़राहम करता है बल्कि एक क़दम आगे बढ़कर समस्त मुस्लमानों को और समस्त ऐसे अफ़राद जो कि मस्जिद आते हैं उनको ग़ैर मुस्लिमों के मज़हबी हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त का हुक्म देता है। यह वह कलाम है जो कि समस्त मज़ाहिब, अदयान और अक़ायद की हिफ़ाज़त और दिफ़ा करता है। यह वह ख़ालिस और प्रत्येक के हुक़ूक़ समोने वाली इस्लामी तालीमात हैं जो हम समस्त दुनिया तक फैलाने की कोशिश कर रहें हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : जहां तक इस मस्जिद का ताल्लुक़ है तो आप सोचते होंगे कि हमने ज़ायन में मस्जिद तामीर करने का फ़ैसला क्यों किया? निसन्देह उसका बुनियादी उद्देश्य तो वही है जो मैं वर्णन कर चुका हूँ। दूसरा यह कि जो लोग इस शहर की तारीख़ से वाक़फ़ीयत रखते हैं उनको इलम होगा कि ज़ायन शहर की बुनियाद एक Evangelist ईसाई मिस्टर इलैगज़ेंडर डोई ने रखी, जिसने ख़ुदा की तरफ़ से निर्धारित होने का दावे किया था। मिस्टर डोई इस्लाम की सख़्त मुख़ालेफ़त और मुस्लमानों से नफ़रत का इज़हार करता था। यह मुख़ालेफ़त जमाअत अहमदिया के संस्थापक के इलम में आई और आप अलैहिस्सलाम ने इस को बराह-ए-रास्त चैलेंज दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : आप में से बाअज़ ये सवाल उठाएँगे कि जमाअत के संस्थापक ने मिस्टर्ड डोई को मुख़ातब करते हुए सख़्त लहजा क्यों अपनाया और यह किस तरह आपकी प्यार-ओ-मुहब्बत की तालीम से मुताबिक़त है?

दरअसल हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुरअमन तालीमात और डोई को उत्तर देने में बाहमी कोई तज़ाद नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने किसी एक अवसर पर भी फ़साद और इंतहापसंद रद्द-ए-अमल की हिदायत नहीं की। दरहक़ीक़त जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मिस्टर्ड डोई की इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ हर्ज़ा-सराई का इलम हुआ तो आप अलैहिस्सलाम ने बाहमी एहतेराम को मलहूज़ रखते हुए उसे दलील से क़ायल करने की कोशिश की कि वह तहम्मुल का मुज़ाहरा करे और मुस्लमानों के जज़बात का ख़्याल करे। इस के बरख़िलाफ़ मिस्टर्ड डोई इस्लाम के मुक़ाबिल खड़ा हो गया और खुल कर इस्लाम के नष्ट करने की ख़ाहिश की। नियमित लिखता है कि "मैं ख़ुदा से दुआ करता हूँ कि वह दिन जल्द आए इस्लाम दुनिया से नाबूद हो जाए। हे ख़ुदा! तू ऐसा ही कर। हे ख़ुदा! इस्लाम को हलाक कर दे।"

फिर अपनी तहरीरात में मिस्टर डोई ने बड़े फ़ख़्रिया अंदाज़ में इस को ईसाईयत और इस्लाम के माबैन अज़ीम जंग क़रार दिया। उसने लिखा कि अगर मुस्लमान ईसाईयत क़बूल न करें तो वे हलाकत-ओ-तबाही में ग्रस्त होंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : उन इंतेहाई बयानात और कष्ट देने वालों के उत्तर में बानी जमाअत अहमदिया ने इस बात को यक़ीनी बनाया कि हज़ारों बल्कि लाखों मासूम लोगो ं को इस तकलीफ़ से बचाया जाएं जिसमें वह मिस्टर डोई की ईसाईयों और मुस्लमानों के माबैन मज़हबी जंगों की ख़ाहिश पूरी होने के नतीजा में पड़ सकते थे। इसलिए आप अलैहिस्सलाम ने मिस्टर डोई को मुबाहला का चैलेंज दिया। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मुस्लमानों की हलाकत-ओ-तबाही की दुआ करने की बजाय मस्टर्ड यह दुआ करें कि हम दोनों में से जो झूठा है वह दूसरे की ज़िंदगी में मर जाए। यह दरअसल एक हमदर्दाना फ़ेअल और हालात को बेहतर करने का ज़रीया था। बजाय इस के कि समस्त मुस्लमानों और ईसाईयों को एक दूसरे के मुक़ाबिल खड़ा कर दिया जाए हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात पर-ज़ोर दिया कि आप और मिस्टर डोई दुआ का सहारा लें और मुआमला अल्लाह तआला के हाथ में दें।

शेष ..

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

एडिशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद नूरुल इस्लाम के अंतर्गत नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad